वर्ष:6 अंक: 22

मई 16-31, 2026 (नि:शुल्क)

न्यू इंडिया समाचार

हमें फॉलो करें @NISPIBIndia

भारत की जनगणना

2027

CENSUS OF INDIA

जनगणना से जन कल्याण

जन-जन की गिनती राष्ट्र की प्रगति

जनगणना एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य है, इसके आंकड़े कई साल तक के लिए हमारी नीतियों के निर्धारण और कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण आधार बनेंगे, इसलिए सही सूचना देना है जन-जन का कर्तव्य...

ई-कॉपी के लिए QR स्कैन करें

राष्ट्र निर्माण में सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम का महत्वपूर्ण योगदान

रेडियो पर प्रसारित होने वाले लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' की 133वीं कड़ी के माध्यम से एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश-विदेश के लोगों के साथ अपने विचार साझा किए। 26 अप्रैल को प्रसारित इस कार्यक्रम में उन्होंने जहां विज्ञान, तकनीक और देश की उपलब्धियों पर जोर दिया वहीं भारत की प्रगति में वैज्ञानिकों की भूमिका की भी सराहना की। पवन और सौर ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में देश की बढ़ती ताकत का जिक्र किया। साथ ही, उन्होंने जनगणना अभियान सहित कई महत्वपूर्ण विषयों पर बात की। प्रस्तुत है मन की बात के संपादित अंश...

- **न्यूक्लियर प्रोग्राम :** भारत ने विज्ञान को हमेशा देश की प्रगति से जोड़कर देखा है। इसी सोच के साथ हमारे वैज्ञानिक सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम को आगे बढ़ा रहे हैं। उनके प्रयासों से यह कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।
- **क्रिटिकैलिटी हासिल :** न्यूक्लियर वैज्ञानिकों ने एक बड़ी उपलब्धि से भारत का गौरव बढ़ाया है। तमिलनाडु के कलपक्कम में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर ने क्रिटिकैलिटी हासिल कर ली है। दरअसल, क्रिटिकैलिटी वह स्टेज है, जिसमें रिएक्टर पहली बार आत्मनिर्भर परमाणु श्रृंखला रिएक्शन में सफलता हासिल करता है।
- **पवन-ऊर्जा :** पवन-शक्ति भारत के विकास की नई कहानी लिख रही है। भारत ने हाल ही में पवन-ऊर्जा में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। अब भारत की पवन ऊर्जा उत्पादन क्षमता 56 गीगावॉट से अधिक हो चुकी है।
- **टीम पर गर्व :** फ्रांस के बोरदो में आयोजित यूरोपियन गर्ल्स मैथमेटिकल ओलंपियाड में हमारी बेटियों ने अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया। मुझे इस प्रतिभाशाली टीम पर बहुत गर्व है। हमारी टीम विश्व में छठे स्थान पर रही।
- **बुद्ध के विचार :** भगवान गौतम बुद्ध का जीवन संदेश आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने हमें सिखाया है कि शांति हमारे भीतर से शुरू होती है, स्वयं पर विजय सबसे बड़ी विजय होती है। आज दुनिया जिस तरह के तनावों और संघर्षों से गुजर रही है, ऐसे समय में बुद्ध के विचार और भी अहम हो गए हैं।
- **परंपराओं पर गर्व :** बीटिंग रिट्रीट का म्यूजिक पहली बार वेव्स ओटीटी पर उपलब्ध है। आने वाले समय में यह दूसरे प्लेटफॉर्म पर भी मौजूद होगा - आप इसे जरूर सुनें। आपको अपनी आर्म्ड फोर्सेस और उनकी परंपराओं पर बहुत गर्व होगा।
- **संरक्षण बढ़ाया :** छत्तीसगढ़ में काले हिरण फिर से दिखाई देने लगे हैं। एक समय इनकी संख्या बहुत कम हो गई थी लेकिन लगातार प्रयास हुए और संरक्षण बढ़ाया गया। आज ये फिर से खुले मैदानों में दौड़ते नजर आते हैं। ऐसी ही उम्मीद Great Indian bustard यानि गोडावण के संरक्षण में भी दिख रही है।
- **बांस सेक्टर में पूर्वोत्तर की सफलता :** जिस चीज को कभी बोझ के रूप में देखा जाता था, 2017 में कानून में बदलाव कर बांस को पेड़ की श्रेणी से बाहर किया। तब से बांस क्षेत्र में रोजगार, कारोबार और इनोवेशन को नई गति मिली है। हमारी माताएं-बहनें इसकी सबसे बड़ी लाभार्थी हैं।
- **विशेष पोर्टल :** राष्ट्रीय अभिलेखागार ने एक विशेष पोर्टल पर अनोखा डाटाबेस शेयर किया है। इस संस्था ने 20 करोड़ से भी ज्यादा अमूल्य दस्तावेजों को डिजिटाइज कर सार्वजनिक किया है। आप सभी www.abhilekh-patal.in पर जरूर विजिट करें।
- **जनगणना 2027 :** देश की जनगणना सिर्फ सरकारी काम नहीं है। यह हम सब की जिम्मेदारी है। आपकी भागीदारी बहुत जरूरी है। आइए, हम सब मिलकर इस प्रक्रिया में भाग लें। जनगणना 2027 को सफल बनाएं।
- **लोकल से ग्लोबल :** भारतीय चीज अब देश की सीमाओं से निकलकर दुनिया के बाजारों और रेस्तरां तक पहुंच रही है। आज हम लोकल से ग्लोबल की बात करते हैं, उसमें भारतीय चीज (Cheese) का उदाहरण हमें, आगे की दिशा दिखाता है। ■

'मन की बात' पूरी सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

न्यू इंडिया
समाचार
वर्ष: 6, अंक: 22 । 16-31 मई, 2026

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा
प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

मुख्य सलाहकार संपादक
संतोष कुमार

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक
पवन कुमार

सहायक सलाहकार संपादक
अखिलेश कुमार
चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन
सुमित कुमार (अंग्रेजी)
रजनीश मिश्रा (अंग्रेजी)
नदीम अहमद (उर्दू)

सीनियर डिजाइनर
फूलचंद तिवारी

डिजाइनर
अभय गुप्ता
सत्यम सिंह

13 भाषाओं में उपलब्ध न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने के लिए क्लिक करें।

https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

न्यू इंडिया समाचार के पुराने अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें

https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx

न्यू इंडिया समाचार के बारे में लगातार अपडेट के लिए फॉलो करें: @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर...

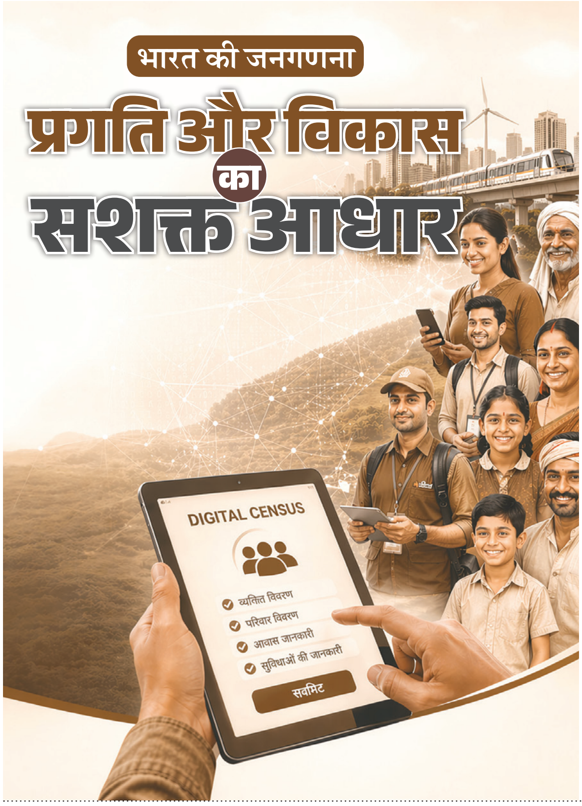

जनगणना 2027 आवरण कथा

भारत में जनगणना मात्र जनसंख्या की गणना नहीं है, बल्कि यह भारत की संपूर्ण नीति-निर्माण संरचना की रीढ़ है। प्रत्येक दशक की शुरुआत में होने वाली जनगणना भले कोविड के कारण इस बार देरी से अप्रैल 2026 में शुरू हुई हो, लेकिन अब यह आधुनिक तकनीक और डिजिटल क्रांति के प्रतीक के रूप में विकसित भारत का करने जा रही है आधार तैयार... | 8-26

पीएम मोदी का यूपी दौरा

गंगा एक्सप्रेसवे : नए सपनों और अवसरों का गेटवे

पीएम मोदी ने गंगा एक्सप्रेसवे सहित हजारों करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का किया लोकार्पण और शिलान्यास | 27-29

समाचार सार | 4-5
सुनिश्चित हो रही खाद्य सुरक्षा
अन्न भंडारण योजना से मजबूत हो रही देश की अर्थव्यवस्था | 6-7
न्यूजीलैंड में भारतीय निर्यात शुल्क मुक्त...
भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर | 32-35
भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्तंभ
कोरिया के राष्ट्रपति की भारत यात्रा | 36-37
व्यक्तित्व : कुमुदिनी लाखिया
भारतीय शास्त्रीय नृत्य की महान साधिका | 38

वैश्विक पर्यटन और सांस्कृतिक स्थल का केंद्र बना पूर्वोत्तर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिक्किम के दौरे के दौरान 4,000 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का किया उद्घाटन और शिलान्यास | 30-31

प्रकाशक: कंचन प्रसाद, महानिदेशक, सीबीसी (केंद्रीय संचार ब्यूरो)। **पत्राचार और ईमेल के लिए पता:** कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003. **ईमेल- response-nis@pib.gov.in आर. एन. आई. नंबर DELHIN/2020/78812**

संपादक की कलम से...

जनगणना- 2027
विकसित भारत की यात्रा का आधार...

सादर नमस्कार।

भारत में विश्व का सबसे बड़ा जनगणना-2027 का अभियान शुरू हो गया है। यह देश के सबसे बड़े प्रशासनिक और सांख्यिकीय अभियान का आरंभ है। यह पूरी तरह डिजिटल डेटा कैप्चर के साथ स्व-गणना की सुविधा वाली भारत की पहली जनगणना है। हर कल्याणकारी योजना, हर निर्वाचन क्षेत्र की सीमा, हर विकास योजना जनगणना के आंकड़ों पर आधारित होती है। भारत में जनगणना 150 वर्षों से अधिक समय से संपन्न हो रही है। पहली पूर्ण जनगणना 1881 में ब्रिटिश शासन के अंतर्गत हुई थी, तब से प्रत्येक 10 वर्ष पर यह आयोजित की जा रही है। पिछली जनगणना 2011 में हुई थी और 2021 में प्रस्तावित थी। लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण यह जनगणना स्थगित करनी पड़ी थी। ऐसे में 2027 की जनगणना विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह लंबे अंतराल के बाद नई तस्वीर प्रस्तुत करेगी। यह जनगणना इसलिए भी विशेष है क्योंकि आजादी के बाद पहली बार इस पूरी प्रक्रिया में जातिगत जनगणना भी शामिल की गई है। सामाजिक समरसता और न्याय की दिशा में यह एक प्रभावी कदम है।

जनगणना का सीधा अर्थ है, देश के प्रत्येक व्यक्ति की गणना और उससे संबंधित सामाजिक-आर्थिक जानकारी का संकलन। इस दशकीय प्रक्रिया से यह समझना सहज हो जाता है कि देश में कितने लोग रहते हैं, उनकी आयु संरचना क्या है, शिक्षा का स्तर कैसा है, रोजगार की स्थिति क्या है और वह किन सुविधाओं से युक्त या वंचित हैं। जनगणना से प्राप्त आंकड़े सरकार की नीतियों का आधार बनते हैं। सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल आपूर्ति, आवास, रोजगार जैसे सभी क्षेत्र की योजना इन्हीं आंकड़ों के आधार पर तैयार होती है। यानी नीति और योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनगणना की सफलता केवल सरकार के प्रयासों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें जन सहभागिता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह सही और पूरी जानकारी प्रदान करे। यह केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि देश निर्माण में योगदान है। जनगणना की प्रक्रिया, उसके उद्देश्य, महत्व, उपयोग और विकसित भारत की यात्रा में योगदान को दर्शाती जनगणना 2027 ही इस बार के हमारे अंक की आवरण कथा बनी है।

इसके अलावा व्यक्तित्व की कड़ी में भारतीय शास्त्रीय नृत्य की महान साधिका कुमुदिनी लाखिया, फ्लैगशिप में अन्न भंडारण योजना सहित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पखवाड़े भर के कार्यक्रमों को इसमें शामिल किया गया है।

साथ ही, पत्रिका के इनसाइड पेज पर मन की बात और बैक कवर पर देवभूमि उत्तराखंड में चारधाम यात्रा के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शुभकामनाएं और लिखे गए पत्र के अंश पर विशेष सामग्री समाहित है।

आप अपना सुझाव हमें भेजते रहें।

धीरेन्द्र

(धीरेन्द्र ओझा)

हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

आपकी बात...

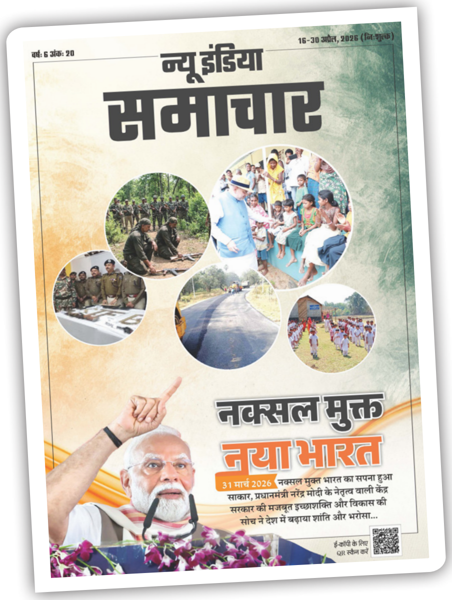

पत्रिका पाक्षिक जानकारी का खजाना

मैं न्यू इंडिया समाचार पत्रिका का नियमित पाठक हूं। पत्रिका में मुझे संपादकीय से पूरे इश्यू के बारे में जानकारी मिलती है। इस जानकारी के आधार पर पत्रिका पढ़ने वालों के लिए उपयोगी हो जाती है। यह पत्रिका पाक्षिक जानकारी का खजाना है, इसलिए मुझे गर्व है कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत' के लक्ष्य को पाने में अहम भूमिका निभा रही है।

balkrishnakasar5@gmail.com

अपने कंटेंट और ओवरऑल एनक्लोजर में बहुत अच्छा

5 अप्रैल का नेशनल मैरीटाइम स्पेशल न्यू इंडियन समाचार अपने कंटेंट और ओवरऑल एनक्लोजर में बहुत अच्छा था। इकोनॉमिक्स के टीचर के तौर पर, मुझे इस स्पेशल वॉल्यूम से बहुत फायदा हुआ। मैं निश्चित रूप से अपने स्टूडेंट्स और उन लोगों को यह डॉक्यूमेंट रिकमेंड करूंगा जो भारत को पूरी तरह से जानने में इंटरेस्टेड हैं।

डॉ. जीजीकुमारी टी
jijikumari@gmail.com

गागर में सागर, बेहतरीन और शानदार

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका का नवीनतम अंक असल में गागर में सागर है। मैं यह पत्रिका बहुत लंबे समय से पढ़ रहा हूं और इसमें दी गई जानकारी हमेशा बेहतरीन और शानदार होती है। लेकिन इस बार पूरी टीम की कोशिश एक नागरिक की संतुष्टि के लिहाज सबसे ऊंचे लेवल की है, जिसमें देश के समुद्री तट की दौलत और ट्रांसपोर्ट की क्षमता पर खास कवरेज शामिल है। जानकारी इकट्ठा करने और बहुत ही शानदार तरीके से पेश करने के लिहाज से ऊंचे स्टैंडर्ड की है। इस लेटेस्ट पब्लिकेशन को असल में शिपिंग इंडस्ट्री में देश के समुद्री महत्व और दबदबे के लिए एक रेफरेंस बुक माना जाएगा। पत्रिका का सबसे अच्छा हिस्सा बाबू जगजीवन राम पर आर्टिकल है जो दिवंगत महान नेता के प्रति पूरे सम्मान के साथ लिखा गया है।

मनमोहन बहेड़ दाधीच
man.bahed82@gmail.com

पत्रिका में होते हैं भारत के बहुत सारे इंटरेस्टिंग सब्जेक्ट

मैं न्यू इंडिया समाचार की ई-पत्रिका का नियमित पाठक हूं। यह पत्रिका बहुत दिलचस्प है और इसमें भारत के बहुत सारे इंटरेस्टिंग सब्जेक्ट होते हैं।

sangitadatta937@gmail.com

तरक्की और वेलफेयर स्कीम के बारे में जानने का अच्छा जरिया

भारत सरकार की तरफ से पब्लिश होने वाली 'न्यू इंडिया समाचार' पत्रिका देश की तरक्की और अलग-अलग वेलफेयर स्कीम के बारे में जानने का एक बहुत अच्छा जरिया है। मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक हूं।

राज किशोर नायक
rajkishorenayak405@gmail.com

पत्राचार और ईमेल के लिए पताः कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003

ईमेल- response-nis@pib.gov.in

समाचार सार

महिलाओं की रोजगार दर में लगभग दोगुनी वृद्धि

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में महिलाओं के लिए नए और अनुकूल अवसर खुल रहे हैं, जिससे महिला रोजगार के संकेतकों में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। महिला श्रम बल सहभागिता दर पिछले सात वर्षों में काफी बढ़ी है। वर्ष 2017-18 में 23.3% से बढ़कर 2025 में 40% हो गई है। इसी अवधि में महिला श्रमिक जनसंख्या अनुपात भी 22 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 39 प्रतिशत हो गया है। इसके अलावा, महिला बेरोजगारी दर 5.6 प्रतिशत से घटकर 3.1 प्रतिशत हो गई है। यह दर्शाता है कि रोजगार की तलाश करने वाली महिलाएं अब अधिक सफलतापूर्वक रोजगार प्राप्त कर रही हैं। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने कहा कि पिछले एक दशक में भारत के सामाजिक सुरक्षा कवरेज में लगभग तीन गुना विस्तार हुआ है जो वर्ष 2015 के 19 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2025 में 64.3 प्रतिशत से अधिक हो गया है। उन्होंने कहा कि यह श्रम कानून सुधार, डिजिटल समावेशन और लक्षित कल्याण वितरण जैसे क्षेत्रों में निरंतर नीतिगत कार्रवाई का परिणाम है।

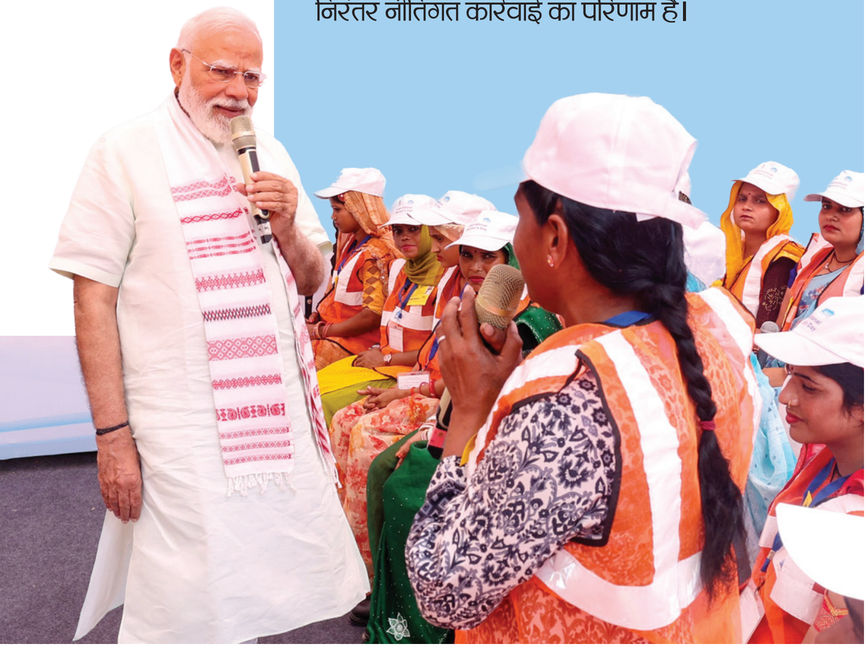

सर्वकालिक उच्च स्तर पर समुद्री खाद्य पदार्थों का निर्यात... 72 हजार करोड़ रुपये के पार

विकसित भारत 2047 के संकल्प की सिद्धि में मत्स्य पालन क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। यही वजह है कि केंद्र सरकार मत्स्यपालन और जलीय कृषि को मजबूत करने, मूल्य श्रृंखलाओं का आधुनिकीकरण करने और समुद्री खाद्य पदार्थों के निर्यात के विस्तार के लिए लगातार काम कर रही है। इसी का परिणाम है कि भारत का समुद्री खाद्य निर्यात 72 हजार करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्चतर स्तर पर पहुंच गया है। इसकी मात्रा 19.32 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच गई। फ्रोजन झींगा ने भारत के रिकॉर्ड समुद्री खाद्य निर्यात में 47,973 करोड़ रुपये का योगदान दिया है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2026 के लिए करें नामांकन

आप प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2026 के लिए खुद को फिट मानते हैं तो नामांकन करें। नामांकन की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2026 है। यह राष्ट्रीय स्तर का एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है जो प्रतिवर्ष देश भर के बच्चों की असाधारण उपलब्धियों को मान्यता देने के लिए प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार उन बच्चों को दिया जाता है जो वीरता, खेल, सामाजिक सेवा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और कला एवं संस्कृति के क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान के पात्र हैं।

भारत में रहने वाला कोई भी भारतीय नागरिक, जिसकी आयु 31 जुलाई 2026 को 5 से 18 वर्ष तक हो, इन पुरस्कारों के लिए पात्र है। नामांकन केवल राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल **https://awards.gov.in** पर ही स्वीकार किए जाएंगे। पुरस्कारों के लिए स्व-नामांकन और अनुशंसा, दोनों पर विचार किया जाएगा।

ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म यूजर का डेटा भारत में स्टोर करेंगे

संसद ने नागरिकों को ऑनलाइन मनी गेम्स के बढ़ते खतरे से बचाने, ई-स्पोर्ट्स एवं ऑनलाइन सोशल गेम्स के लिए एक अनुकूल ढांचा तैयार करने के उद्देश्य से अगस्त, 2025 में ऑनलाइन गेमिंग प्रमोशन एंड रेगुलेशन एक्ट, 2025 पारित किया था। उसी कड़ी में केंद्र सरकार ने अब गेमिंग प्रमोशन एंड रेगुलेशन नियम, 2026 अधिसूचित किए हैं जो 1 मई, 2026 से लागू हो गया है।

- एक ऐसा स्पष्ट, पारदर्शी और समयबद्ध तंत्र तैयार होगा जिसमें कोई ऑनलाइन गेम ऑनलाइन मनी गेम (प्रतिबंधित) है या ऑनलाइन सामाजिक गेम या ई-स्पोर्ट्स है, यह साफ हो सकेगा। इसमें ई-स्पोर्ट्स और कुछ ऑनलाइन गेम्स रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया भी दी गई है।
- एक ऑनलाइन गेमिंग प्राधिकरण बनेगा जो ऑनलाइन सामाजिक खेलों और ई-स्पोर्ट्स का डिजिटल रेगुलेटर होगा।
- सामान्यतः किसी ऑनलाइन गेम को प्राधिकरण के पास रजिस्ट्रेशन की जरूरत नहीं होगी लेकिन केंद्र सरकार नोटिफिकेशन जारी करके कहे कि किसी गेम या गेम की श्रेणी को रजिस्टर करना जरूरी है तो कराना होगा।
- ई-स्पोर्ट को रजिस्ट्रेशन कराना होगा। प्राधिकरण उसे रजिस्टर करेगा, बशर्ते वह गेम नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस एक्ट, 2025 के तहत मान्यता प्राप्त हो।
- नियम 17 में कहा गया है कि यूजर का डेटा भारत में स्टोर करना होगा और तय समय तक सुरक्षित रखना होगा।
- ऐसे ऑनलाइन गेम जिसे मनी गेम माना जाएगा, उसकी सूची नाम व विवरण सहित प्राधिकरण अपनी वेबसाइट या एप पर सार्वजनिक करेगा।
- गेम कंपनी को यूजर्स की शिकायत मैकेनिज्म तय करेगा। अगर यूजर कंपनी के जवाब से संतुष्ट नहीं है, तब 30 दिन के भीतर प्राधिकरण के पास शिकायत कर सकता है।

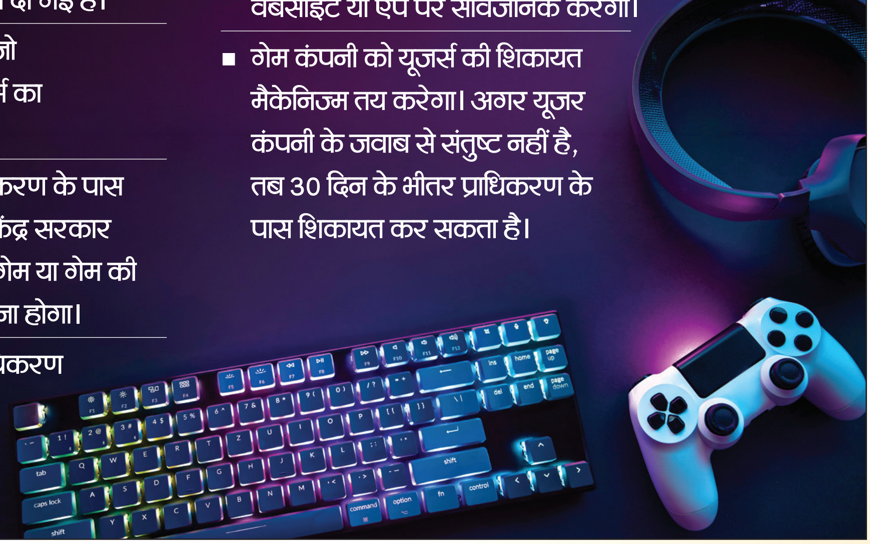

फूड प्रोसेसिंग के लिए पीएलआई स्कीम से 3.39 लाख रोजगार सृजित

फूड प्रोसेसिंग उद्योग के लिए उत्पादन पर आधारित प्रोत्साहन योजना (पीएलआईएसएफपीआई) पर सरकार 2021-22 से चालू वित्त वर्ष 2026-27 तक 10,900 करोड़ रुपये खर्च कर रही है। इसका उद्देश्य बिक्री में वृद्धि एवं ब्रांड के प्रचार को प्रोत्साहित करके वैश्विक स्तर पर भारतीय खाद्य मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र की अग्रणी कंपनियों का निर्माण करना है। इस योजना के अंतर्गत फरवरी, 2026 तक 274 परियोजना स्थलों से संबंधित 165 आवेदनों को मंजूरी दे दी गई है जिसमें 2,162.55 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि दी गई है। इन परियोजनाओं से 3.39 लाख रोजगार सृजित हुए हैं जो निर्धारित किए गए 2.5 लाख रोजगार के लक्ष्य से काफी अधिक है। फूड प्रोसेसिंग एवं संरक्षण क्षमता में प्रति वर्ष 34 लाख मीट्रिक टन की वृद्धि हुई है।

भारत का 99वां रामसर स्थल बना शेखा झील पक्षी अभयारण्य

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने 22 अप्रैल को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में स्थित शेखा झील पक्षी अभयारण्य को भारत का 99वां रामसर स्थल घोषित किया। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश में इन स्थलों की संख्या बढ़कर 12 हो गई है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत के पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्विकसित करने के अभियान के अंतर्गत आर्द्रभूमि और पशुओं, विशेष रूप से पक्षियों के प्राकृतिक आवास के संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को वैश्विक समुदाय से एक बार फिर सराहना मिली है। शेखा झील मध्य एशियाई फ्लाईवे पर एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जो सर्दियों के मौसम में हंस, पेंटेड स्टॉर्क और विभिन्न प्रकार की बत्तखों जैसे प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण पर्यावास प्रदान करती है।

सुनिश्चित हो रही खाद्य सुरक्षा

देश और दुनिया की बढ़ती खाद्यान्न जरूरतों को पूरा करने के लिए शुरू की गई विश्व की सबसे बड़ी सहकारी अन्न भंडारण योजना ने न केवल किसानों को फायदा पहुंचाया है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया है। 31 मई 2023 को कैबिनेट से मंजूरी मिलने और 24 फरवरी 2024 को प्रधानमंत्री द्वारा इसके शुभारंभ के बाद से किसानों की आय में भी देखी गई है बढ़ोतरी...

सहकारिता क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना के माध्यम से पैक्स स्तर पर ही कृषि संबंधी आवश्यकतों को पूरा करने की कोशिश की जा रही है। इससे न सिर्फ देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो रही है बल्कि अनाज की होने वाली बर्बादी में भी कमी आ रही है। साथ ही किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य भी मिल रहा है। पायलट परियोजना के तौर पर शुरू की गई इस योजना को अंतर-मंत्रालयी समिति, राष्ट्र स्तरीय समन्वय समिति, राज्य स्तरीय सहकारी विकास समिति एवं जिला स्तरीय सहकारी विकास समिति द्वारा समन्वित किया जा रहा है।

देश में खाद्यान्न भंडारण क्षमता की कमी को दूर करने एवं एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के लिए केंद्र सरकार ने 'सहकारिता क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना' को मंजूरी दी थी। योजना के तहत कृषि अवसंरचना निधि (एआईएफ), कृषि विपणन अवसंरचना योजना (एएमआई), कृषि यांत्रिकीकरण पर उप-मिशन (एसएमएएम), प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना (पीएमएफएमई) के माध्यम से प्राथमिक कृषि क्रेडिट समितियों (पैक्स) व अन्य सहकारी समितियों के स्तर पर गोदाम, कस्टम हायरिंग केंद्र, प्रसंस्करण इकाई, उचित मूल्य की दुकानों सहित विभिन्न एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण किया जा रहा है।

योजना में भाग लेने वाली सहकारी समितियों पर वित्तीय बोझ को काफी हद तक कम करने के लिए नाबार्ड की स्पेशल रि-फाइनेंस स्कीम का भी उपयोग किया गया है। जब कृषि अवसंरचना निधि (एआईएफ) के तहत उपलब्ध 3% ब्याज अनुदान को जोड़ा जाता है तो विश्व की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना के अधीन पैक्स के लिए प्रभावी ऋण ब्याज दर घटकर मात्र 1% रह जाती है।

एआईएफ योजना के अधीन पैक्स को गोदामों के निर्माण हेतु लिए

एएमआई योजना के तहत किए गए संशोधन...

- मार्जिन मनी की आवश्यकता को 20% से घटाकर 10% किया गया।

मैदानी क्षेत्र
7,000
रुपये प्रति मीट्रिक टन निर्माण लागत किया गया। 3,000-3,500 प्रति मीट्रिक टन से संशोधित करके।

पूर्वोत्तर
8,000
रुपये प्रति मीट्रिक टन 4,000 रुपये प्रति मीट्रिक टन से बढ़ाकर किया गया।

- पैक्स के लिए सब्सिडी 25% से बढ़ाकर 33.33% कर दी गई है (मैदानी क्षेत्रों के लिए 875 रुपये प्रति मीट्रिक टन से बढ़ाकर 2,333 प्रति मीट्रिक टन और पूर्वोत्तर राज्यों के लिए 1,333.33 रुपये प्रति मीट्रिक टन से बढ़ाकर 2,666 रुपये प्रति मीट्रिक टन)।
- पैक्स के लिए आंतरिक सड़कों, तौल-पुलों, चारदीवारी आदि जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए कुल स्वीकार्य सब्सिडी का एक तिहाई अतिरिक्त सब्सिडी प्रदान करने का प्रावधान किया गया है।

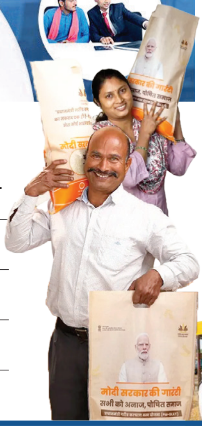

योजना के तहत बन रहे...

- गांव स्तर पर पैक्स/सहकारी समितियों में गोदाम
- मशीन किराया केंद्र
- प्रोसेसिंग यूनिट
- राशन दुकान

अन्न भंडारण योजना की प्रगति...

560	सहकारी समितियों को अन्न भंडारण योजना के तहत चिन्हित किया गया है।
120	सहकारी समितियों में गोदामों का निर्माण पूरा किया गया है।
426	गोदाम के निर्माण के लिए डीपीआर प्रस्तुत की गई है।
72,702	मीट्रिक टन भंडारण क्षमता का इससे सृजन हुआ है।

(नोटः आंकड़े 20 जनवरी 2026 तक के हैं।)

अन्न भंडारण केंद्र बनाने की प्रक्रिया

- राज्य सहकारी विभाग पैक्स/ सहकारी समिति चिन्हित करता है।
- स्थान के अनुसार **DPR** (परियोजना रिपोर्ट) तैयार की जाती है।
- तय डिजाइन और गुणवत्ता मानकों के अनुसार निर्माण कार्य शुरू होता है।
- लगभग 6 महीने में गोदाम तैयार हो जाता है।

9 साल तक किराए की गारंटी भारतीय खाद्य निगम (**FCI**) द्वारा दी जाती है।

कम ब्याज **(लगभग 1%)** पर लोन व 33% तक सब्सिडी मिलती है।

गए ऋण पर ब्याज अनुदान का लाभ दिया जाता है और एएमआई योजना के अंतर्गत खाद्यान्न भंडारण के निर्माण के लिए 33% सब्सिडी दी जाती है। कृषि और किसान कल्याण विभाग ने पैक्स के लिए एआईएफ योजना के अधीन क्रेडिट गारंटी को 2+5 वर्ष से 2+8 वर्ष तक बढ़ा दिया है।

केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह अन्न भंडारण की व्यवस्था पर बल देते हुए कहते हैं कि आने वाले दिनों में अन्न भंडारण की व्यवस्था लगभग तीन गुना बढ़ाने की जरूरत है, जिसमें से 2 गुना सहकारिता क्षेत्र को करनी चाहिए। यह सभी की जिम्मेवारी है, केवल पैक्स पर न छोड़ें, तहसील की कोऑपरेटिव डेयरियां, स्टेट लेवल के मार्केटिंग फेडरेशन, डिस्टिक कोऑपरेटिव बैंक फाइनेंस कराकर, डिस्ट्रिक्ट के सेल्स-परचेज यूनियन, सबको बड़े-बड़े गोदाम बनाना चाहिए। देश का 70% अनाज उत्तर भारत के पंजाब और हरियाणा में उत्पादित होता है, ऐसे में यहीं से अनाज की खरीदी होगी, यहीं स्टोर होगा और यहीं से वितरित हो जाएगा तो परिवहन लागत कम से कम 30-40 प्रतिशत बचा सकते हैं।

जनगणना 2027

आवरण कथा

भारत की जनगणना

प्रगति और विकास का सशक्त आधार

भारत में जनगणना मात्र जनसंख्या की गणना नहीं है, बल्कि यह भारत की संपूर्ण नीति-निर्माण संरचना की रीढ़ है। प्रत्येक दशक की शुरुआत में होने वाली जनगणना भले इस बार कोविड के कारण देरी से अप्रैल 2026 में शुरू हुई हो, लेकिन अब यह आधुनिक तकनीक और डिजिटल क्रांति के प्रतीक के रूप में विकसित भारत का आधार तैयार करने जा रही है, जिसमें स्व-गणना एवं जातीय जनगणना भी शामिल है। डेढ़ सौ वर्षों की विरासत को संजोए, जनगणना 2027 'अमृत काल' में निर्धारित करेगी राष्ट्र के भविष्य की रूपरेखा, जहां दर्ज होगी प्रत्येक नागरिक की जानकारी, भागीदारी और प्रगति। यह केवल गणना नहीं, बल्कि लिखने जा रही है आत्मनिर्भर भारत के विकास की नई परिवर्तनकारी विकास गाथा...

भारत की जनगणना 2027 केवल एक सांख्यिकीय प्रक्रिया नहीं, बल्कि देश के भविष्य की दिशा तय करने वाला एक व्यापक राष्ट्रीय उपक्रम है। यह राष्ट्र का दर्पण है जिसमें भारत स्वयं को देखता है। यह राष्ट्र की आत्मा को समझने और उसके भविष्य को संवारने का एक विराट महायज्ञ है। यह एक ऐसा अवसर प्रदान करता है जब भारत स्वयं को नए दृष्टिकोण से देखता है। अपनी जनशक्ति, विविधता, चुनौतियों और अपार संभावनाओं का आकलन करता है। इसलिए जनगणना केवल आंकड़ों का संकलन या दशकीय अनुष्ठान भर नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की शक्ति, सामर्थ्य का प्रतिबिंब है। यह केवल वर्तमान का लेखा-जोखा नहीं, भविष्य की नींव रखने का सशक्त माध्यम है। ऐसे में आज जब भारत तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर है और विकसित भारत 2047 का विराट लक्ष्य सामने है, तब जनगणना 2027 का महत्व और भी बढ़ जाता है। अगर कम शब्दों में कहा जाए तो जनगणना राष्ट्रीय महत्व का एक ऐसा कार्य है, जिसके आंकड़े कई वर्षों तक के लिए राष्ट्र की नीतियों के निर्धारण, कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण आधार बनते हैं और आने वाले दशकों की योजना को नए आयाम, नए आकार मिलते हैं।

जनगणना 2027
आवरण कथा

जनगणना की लंबी और समृद्ध रही है परंपरा

भारत ने अपनी पहली समन्वित जनगणना 1881 में की थी। हालांकि, इतिहास की बात करें तो प्राचीन ग्रंथों, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, अबुल फजल की 'आईन-ए-अकबरी' आदि में भी भारत की जनगणना का मिलता है उल्लेख...

- भारत में जनगणना की एक लंबी और समृद्ध परंपरा रही है। जनगणना का सबसे पहला उल्लेख कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' (321-296 ईसा पूर्व) में मिलता है।
- सम्राट अकबर के वक्त में अबुल फजल की रचना 'आइन-ए-अकबरी' में भी जनगणना का उल्लेख है।
- भारत में पहली आधुनिक जनगणना 1865 और 1872 के बीच हुई। हालांकि यह सभी इलाकों में एक साथ नहीं हुई थी।

आजादी के बाद की जनगणना (1951-2011)

आजादी के बाद पहली बार **1951** में की गई थी जनगणना।

उसके बाद हर 10 वर्ष पर **2011** तक जनगणना होती रही।

कोविड के कारण 2021 में जनगणना संभव नहीं हो सकी जो अब की जा रही है।

नीति निर्माण का सशक्त आधार

जनगणना का राष्ट्र जीवन में कितना महत्व है, इसे स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना-1951 के समय में देश के प्रथम गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने इन शब्दों में बताया था। उन्होंने तब कहा था, "जनगणना का एक संस्था के रूप में सुदूर अतीत रहा है, इसका कार्य मात्र लोगों की गणना ही नहीं अपितु इसमें सूचना का निष्कर्षण शामिल है जो हमारी कई प्रशासनिक नीतियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कार्रवाई के दौरान हासिल की गई जानकारियों से सामाजिक महत्व के मूल्यवान वैज्ञानिक आंकड़ें प्राप्त होते हैं। कई प्रकरणों में यह उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करती है जो आर्थिक नीतियों के अतिरिक्त अन्य मामलों में भी प्रभावशाली होती है। जनसंख्या का सिद्धांत स्वतः अर्थशास्त्र का एक रोचक किस्सा है। जनगणना हमें इन सिद्धांतों के परीक्षण और उनसे तथ्यपरक सामंजस्य स्थापित करने में मदद करती है।"

दरअसल, जनगणना से प्राप्त आंकड़े सरकार की नीतियों की आधारशिला होते हैं। शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य, रोजगार, ग्रामीण-शहरी विकास के लिए नीतियां बनाने और उसे साकार करने में जनगणना के आंकड़े न केवल सटीक होते हैं, बल्कि प्रभावी भी सिद्ध होते हैं। सामाजिक समरसता को मजबूत करने और न्याय की दिशा में जनगणना एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह समाज के उन वर्गों की पहचान करती है जो विकास की दौड़ में पीछे रह गए हैं। सरकार की विभिन्न योजनाएं जैसे गरीब कल्याण, महिला सशक्तीकरण, ग्रामीण विकास आदि इन्हीं आंकड़ों के आधार पर अधिक लक्षित और प्रभावी बनती हैं। यह प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि विकास का प्रकाश समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।

आधुनिक युग में आंकड़ों का महत्व सर्वविदित है। किसी भी देश की तस्वीर और तकदीर निर्धारित करने में आंकड़े यानी डेटा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आंकड़ों का हमारे जीवन में क्या महत्व

जनगणना का उद्देश्य, महत्व और उपयोग

उद्देश्य

गांव, कस्बे और वार्ड स्तर पर प्राथमिक आंकड़ों का सबसे बड़ा स्रोत। जनगणना शासन के लिए एक महत्वपूर्ण साधन, जो अगले दशक की विकास योजना के लिए आधार प्रदान करती है।

महत्व

जनगणना जनसांख्यिकी, अर्थशास्त्र, मानव विज्ञान, समाजशास्त्र, सांख्यिकी और कई अन्य विषयों के विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए आंकड़ों का एक जरूरी स्रोत रही है। भारत को समझने और उसका अध्ययन करने का एक अहम साधन है क्योंकि लोगों की समृद्ध विविधता दशकीय जनगणना से ही जाहिर होती है।

उपयोग

यह आवास की स्थिति, सुविधाएं और संपत्तियां, जनसांख्यिकी, धर्म, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, भाषा, साक्षरता और शिक्षा, आर्थिक गतिविधि, प्रवासन और प्रजनन क्षमता सहित विभिन्न मानदंडों पर विस्तृत आंकड़े मुहैया कराती है। इन आंकड़ों का उपयोग विकास सहित कई कामों के लिए होता है।

दो अलग-अलग चरणों में आयोजित की जा रही है जनगणना

पहला चरण

मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना (HLO), जो अप्रैल से सितंबर, 2026 के दौरान राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्र की सुविधा के अनुसार 30 दिनों की अवधि में आयोजित की जाएगी। मकान सूचीकरण कार्य से पूर्व 15 दिनों तक स्व-गणना की सुविधा भी उपलब्ध होगी।

- इस चरण में मकानों की स्थिति, परिवारों को उपलब्ध सुविधाओं तथा उनके पास उपलब्ध परिसंपत्तियों से संबंधित जानकारी एकत्र की जाएगी। पहले चरण में 33 प्रश्न हैं, जो अधिसूचित किए जा चुके हैं।

दूसरा चरण

जनसंख्या गणना फरवरी 2027 में होगी। लद्दाख संघ राज्य क्षेत्र तथा जम्मू-कश्मीर संघ राज्य क्षेत्र एवं उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेश राज्यों के हिमाच्छादित असमकालिक क्षेत्रों में यह सितंबर 2026 में होगी।

- दूसरे चरण में ही जातियों की गणना भी की जाएगी।
- इस चरण में प्रत्येक व्यक्ति से जनसांख्यिकीय, सामाजिक-आर्थिक, शिक्षा, प्रवास, प्रजनन आदि से संबंधित जानकारी एकत्र की जाएगी।

वर्तमान जनगणना देश की 16वीं जनगणना है और आजादी के बाद की 8वीं जनगणना।

है, हम इस बारे में कभी शायद ही ध्यान देते हों। लेकिन सरकार के नीति-निर्धारण से लेकर देश के विकास और जनता से जुड़ी योजनाओं का आधार यही आंकड़े बनते हैं। जिनका प्रयोग शोध और अर्थव्यवस्था की तस्वीर गढ़ने में किया जाता है। डाटा क्यों और कितना महत्वपूर्ण है इसको अमेरिका के प्रसिद्ध सांख्यिकीविद विलियम एडवर्ड डेमिंग के इन शब्दों से समझा जा सकता है, "डाटा के बिना आप सिर्फ एक राय देने वाले व्यक्ति मात्र हैं।" यानी डाटा किसी भी विचार, नीति, योजनाओं को मजबूत करने का आधार होता है।

गणना का विराट यज्ञ

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार यज्ञ का आयोजन इच्छित फल की प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाता है। इसे उन्नति, इच्छित मनोकामनाओं, आवश्यकताओं को पूर्ण करने का साधन भी माना जाता है। जनगणना 2027 किसी विराट यज्ञ से कम नहीं है। दो चरणों में होने वाली जनगणना-2027 दुनिया का सबसे बड़ा जनगणना कार्य है। जिसकी शुरुआत अप्रैल 2026 से हो चुकी है। हालांकि यह जनगणना 2021 में प्रस्तावित थी। लेकिन कोविड-19 की वैश्विक महामारी के कारण इसे स्थगित करना पड़ा था। यह पहली जनगणना है जो पूरी तरह से डिजिटल होगी। इसमें मोबाइल एप और ऑनलाइन स्व-गणना का प्रावधान पहली बार किया गया है। सभी समुदायों के लिए जाति की गणना भी इस जनगणना के साथ होगी। इसके लिए पूरे भारत में 31 लाख से अधिक कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया है। 16 जून 2025 को, गृह मंत्रालय ने आधिकारिक तौर पर 2027 की जनगणना की अधिसूचना जारी की। भारतीय जनगणना भारत के लोगों की विभिन्न विशेषताओं पर आधारित विभिन्न सांख्यिकीय सूचनाओं का सबसे बड़ा एकल स्रोत है। 150 से अधिक वर्षों के इतिहास

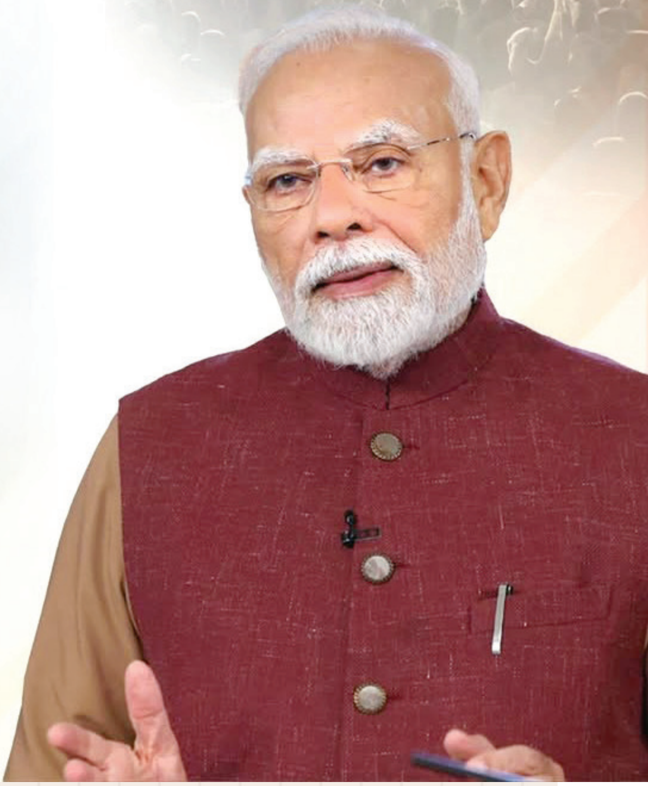

दुनिया की सबसे बड़ी जनगणना पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आह्वान...

मेरे प्यारे देशवासियो,

हमारे देश में इस समय एक बहुत अहम अभियान चल रहा है, जिसके बारे में हर भारतीय को जानकारी होनी जरूरी है। ये है जनगणना का अभियान, यह दुनिया की सबसे बड़ी जनगणना है। साथियों, जो साथी पहले से इस तरह की प्रक्रिया से गुजरे हैं, इस बार जनगणना का उनका अनुभव, अलग होने वाला है।

- *जनगणना 2027 को डिजिटल बनाया गया है। सारी जानकारी सीधे डिजिटल माध्यम में दर्ज हो रही है। घर-घर जाने वाले कर्मचारियों के पास मोबाइल एप है। वे आपसे बात करके उसी में जानकारी दर्ज करेंगे।*

- *इस बार जनगणना में आपकी भागीदारी भी आसान बनाई गई है, आप खुद भी अपनी जानकारी दर्ज कर सकते हैं। कर्मचारी के आने से 15 दिन पहले आपके लिए सुविधा शुरू होगी। आप अपने समय के अनुसार जानकारी भर सकते हैं। जब आप प्रक्रिया पूरी करते हैं, तो आपको एक विशेष आईडी मिलती है। ये आईडी आपके मोबाइल या ई-मेल पर आती है। बाद में जब कर्मचारी आपके घर आता है, तो आप यही आईडी दिखाकर जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं। इससे दोबारा जानकारी देने की जरूरत नहीं पड़ती। समय भी बचता है और प्रक्रिया आसान हो जाती है।*

- *जिन राज्यों में स्व-गणना का काम पूरा हो गया है, वहां, गणना कर्मचारी द्वारा घरों के सूचीकरण का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। अब तक लगभग 1 करोड़ 20 लाख परिवारों का मकान सूचीकरण का कार्य पूरा भी हो चुका है।*

- *देश की जनगणना सिर्फ सरकारी काम नहीं है। यह हम सब की जिम्मेदारी है। आपकी भागीदारी बहुत जरूरी है। आपकी दी गई जानकारी पूरी तरह सुरक्षित रहती है, यह गोपनीय रखी जाती है, डिजिटल सुरक्षा के साथ इसे सुरक्षित किया जाता है। आइए, हम सब मिलकर इस प्रक्रिया में भाग लें। जनगणना 2027 को सफल बनाएं।*

एक कॉल, पूरी जानकारी

टोल-फ्री नंबर पर कॉल करें **1855**

जनगणना 2027 के आधिकारिक अपडेट के लिए QR कोड स्कैन करें।

जनगणना – प्रशासनिक व्यवस्था

- केंद्रीय गृह मंत्री
- केंद्रीय गृह सचिव
- भारत के रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त (राष्ट्रीय स्तर पर)
- निदेशक, जनगणना संचालन निदेशालय (राज्य/केंद्र शासित प्रदेश स्तर पर)
- मुख्य सचिव (राज्य/केंद्र शासित प्रदेश)
- नोडल अधिकारी (राज्य/केंद्र शासित प्रदेश)
- **प्रधान जनगणना अधिकारी :** जिलाधिकारी / उपायुक्त / नगर निगम आयुक्त
- **प्रभार अधिकारी :** एसडीएम / तहसीलदार/ बीडीओ / कार्यपालक अधिकारी
- **गणनाकर्मी एवं पर्यवेक्षक :** शिक्षक, राज्य सरकार के अधिकारी तथा अन्य स्थानीय निकाय के अधिकारी

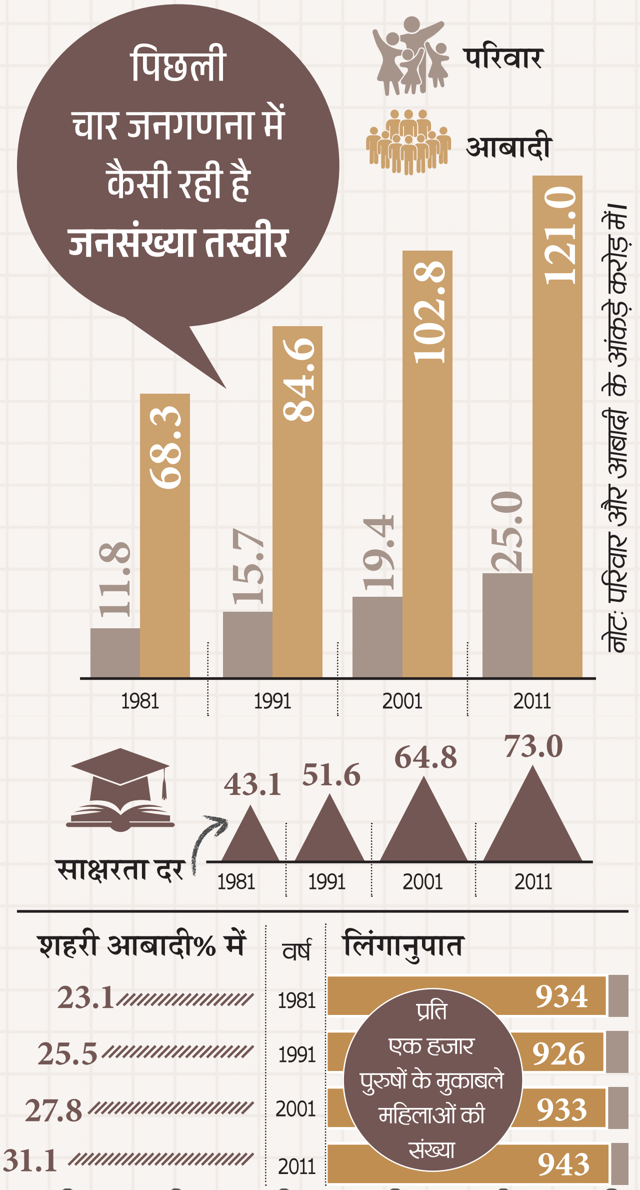

के साथ, यह विश्वसनीय समय-परीक्षित प्रक्रिया हर 10 सालों में जनसंख्या के आंकड़ों की वास्तविक जानकारी प्रदान कर रही है। जनगणना 2027 देश में 16वीं जनगणना और स्वतंत्रता के बाद की 8वीं जनगणना होगी।

जनगणना के उद्देश्य, महत्व और उपयोग को जानना है तो देश के 5वें गृह मंत्री गोविंद बल्लभ पंत के कथन को देखना होगा। उन्होंने कहा था, "वास्तव में, वर्तमान में आप जनगणना रिपोर्ट जो किसी भी जांच और प्रत्येक अध्ययन का अनिवार्य अंश है, के

जनगणना 2027 आवरण कथा

वर्ष 2027 की जनगणना के पहले चरण की शुरुआत हो रही है, जिसमें घर-घर की सूची बनाना और आवास संबंधी कार्य शामिल हैं। यह जनगणना पहली बार डिजिटल माध्यम से डेटा संग्रह के लिए की जा रही है। इससे भारत के लोगों को अपने परिवार के विवरण स्वयं भरने की शक्ति मिलती है। मैं देश के लोगों से अपने परिवार का विवरण स्वयं भरने और जनगणना प्रक्रिया में भाग लेने की अपील करता हूं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

संदर्भ के बिना कोई भी महत्वपूर्ण प्रशासनिक, आर्थिक अथवा सामाजिक कार्य नहीं कर सकते हैं। अपितु छोटी समस्याओं के समाधान के लिए जनगणना रिपोर्ट से बहुधा सहायता लेनी पड़ती है।" जनगणना किसी देश में एक निश्चित समय पर प्रत्येक व्यक्ति, परिवार और भवन के बारे में आधिकारिक और व्यवस्थित रूप से डेटा एकत्र करने की प्रक्रिया है। यह जनसंख्या के आकार, वृद्धि और वितरण को मापती है। यह साक्षरता, आवास, प्रवासन, प्रजनन दर, रोजगार और आय स्तरों को दर्ज करती है। जनसंख्या की गणना को संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज में परिभाषित किया गया है-राष्ट्रीय

अब कागज कलम नहीं... डिजिटल जनगणना 2027

*प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक में भारत डिजिटल क्रांति का अग्रदूत बनकर उभरा है। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में डिजिटल जनगणना महत्वपूर्ण कदम है। पारंपरिक कागज-आधारित तरीकों से आगे बढ़ते हुए, गणना कर्मी 'ब्रिंग योर ओन डिवाइस (**BYOD**)' मॉडल के तहत विशेष मोबाइल अनुप्रयोगों से करेंगे डेटा एकत्र...*

- डिजिटल जनगणना 2027 की शुरुआत हर राज्य व केंद्र शासित प्रदेश में प्रगणक के घर-घर आने से पहले एक समर्पित पोर्टल '**se.census.gov.in**' पर आपकी स्व-गणना से ही हो जाएगी।

- **हाउस लिस्टिंग ब्लॉक क्रिएटर (HLBC) वेब एप्लिकेशनः** यह एक वेब-मैप एप्लिकेशन है जो चार्ज अधिकारियों को उपग्रह चित्रों की सहायता से डिजिटल रूप से हाउस लिस्टिंग ब्लॉक्स बनाने में उपयोग हो रहा है।

- **एचएलओ मोबाइल एप्लिकेशनः** यह एक सुरक्षित ऑफलाइन मोबाइल एप है, जिसके माध्यम से गणना कर्मी हाउस लिस्टिंग डेटा एकत्र और अपलोड कर सकते हैं। यह एप सीधे फील्ड से सर्वर तक डेटा ट्रांसमिशन की सुविधा देता है। इससे पारंपरिक कागजी कार्य की जरूरत नहीं होगी।

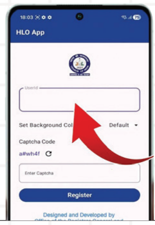

- सभी हाउस लिस्टिंग डेटा इसी एप के माध्यम से एकत्र किए जाएंगे। जिसे केवल पंजीकृत मोबाइल नंबरों द्वारा संचालित किया जा सकता है। यह एप्लिकेशन एंड्रॉइड और **iOS** प्लेटफॉर्म पर 16 क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध है।

- **सेंसस मैनेजमेंट एंड मॉनिटरिंग सिस्टम (CMMS) पोर्टलः** यह एक केंद्रीकृत, वेब-आधारित डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसे प्रशासनिक स्तरों पर जनगणना से संबंधित सभी गतिविधियों की योजना, प्रबंधन, निष्पादन और निगरानी के लिए डिजाइन किया गया है।

जनगणना 2027
सुरक्षित रहेगा डेटा

जनगणना 2027 के दौरान जो भी डेटा जनता से लिया जाएगा, वो कानूनी रूप से पूरी तरह गोपनीय और सुरक्षित होगा। व्यक्तिगत जानकारी किसी भी स्थिति में सार्वजनिक नहीं की जाएगी। इतना ही नहीं, आंकड़ों की सुरक्षा के लिए बहुस्तरीय साइबर कवच तैयार किया गया है जो हैकिंग और सेंधमारी से रहेगा सुरक्षित...

- तकनीक को ध्यान में रखकर इनोवेशन और सबको साथ लेकर चलने से यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि जनगणना-2027 सही, सुरक्षित और कम्प्रेहैन्सिव हो।
- जनगणना 2027 में घर-घर जाकर सुरक्षित मोबाइल एप्लीकेशन का इस्तेमाल कर डेटा एकत्रित किया जा रहा है। सटीक सुरक्षा फीचर इसमें शामिल हैं। डेटा सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक उपाय किए गए हैं।

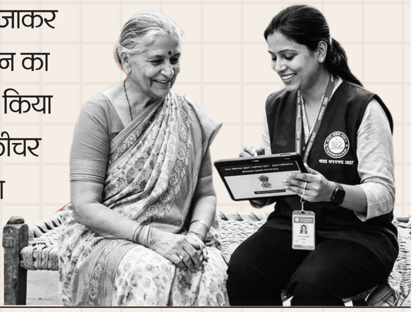

- मोबाइल पर डेटा एकत्र करने और उन आंकड़ों को भेजने के दौरान एवं सर्वर स्तर पर डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भी सभी उपाय किए गए हैं।
- जनगणना 2027 में उपयोग होने वाले डिजिटल उपकरण उच्च स्तरीय डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मजबूत एन्क्रिप्शन और बहु-स्तरीय प्रमाणीकरण से युक्त हैं।
- जनगणना में आंकड़े जनगणना अधिनियम 1948 और जनगणना नियम, 1990 के प्रावधानों के अनुसार एकत्रित किए जाते हैं। इसमें एकत्रित व्यक्तिगत डेटा पूर्णतः गोपनीय रखा जाता है।
- डेटा सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए केवल विभिन्न प्रशासनिक स्तरों पर एकत्रित डेटा ही प्रकाशित किया जाता है।
- जनगणना 2027 की विभिन्न गतिविधियों के प्रबंधन एवं निगरानी के लिए एक वेब पोर्टल विकसित किया गया है।

जिन निवासियों ने स्व-गणना पूरी कर ली है, वह अपनी स्व-गणना आईडी (SE ID) को तैयार रखें और प्रगणक के आने पर इसे उनसे साझा करें। जिन परिवारों ने स्वयं जनगणना का विकल्प नहीं चुना है, उन्हें जनगणना करने वालों द्वारा घर-घर जाकर मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना में शामिल किया जाएगा।

जनसंख्या की गणना के लिए सिद्धांत और सिफारिशों के अनुसार किसी देश या सीमांकित क्षेत्र में विशिष्ट समय अथवा समयों पर सभी व्यक्तियों से संबंधित सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय आकंड़ों को एकत्रित एवं संकलित कर प्रकाशित करने की प्रक्रिया को जनगणना कहते हैं।

जनगणना का वैश्विक संदर्भ

जनगणना शब्द लैटिन शब्द 'सेन्सेर' से लिया गया है, जिसका अर्थ 'आकलन करना' अथवा मूल्यांकन करना होता है। इसका इतिहास पहली या दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है जब रोम में मजिस्ट्रेट को कर लगाने के उद्देश्य से जनसंख्या रजिस्टर तैयार करने और अनिवार्य सैन्य सेवा के लिए वयस्क पुरुषों की उपलब्धता निर्धारित करने की आवश्यकता होती थी। रोमन साम्राज्य की स्थापना से पहले 'भू-कर' संबंधी (कैडस्ट्राल) सर्वेक्षणों के रूप में बहुत कुछ पूर्व जनगणनाओं के साक्ष्य उपलब्ध है। प्राचीन बेबीलोनिया, चीन और मिस्र में ईसा से 30 शताब्दी पहले इस तरह की गणना की गई थी। हेरोडोटस ने नील नदी की घाटी और प्राचीन फारस में इस तरह के उपक्रमों के बारे में बताया। जनगणना के अभिलेखों के कुछ वृत्तांत पुराने विधान खंडों में भी उपलब्ध हैं। पलायन से पूर्व (1,500 ईसा पूर्व) मूसा ने इजरायल के लड़ने वाले पुरुषों की गणना की थी। जबकि चंगेज खान ने 12वीं शताब्दी के उतरार्ध और 13वीं शताब्दी की शुरुआत में कराधान के लिए लोगों की क्षमता निर्धारित

जनगणना दो हिस्सों में होती है, पहले घरों की, फिर व्यक्तियों की, अभी प्रथम चरण चल रहा है जिसमें घरों की गणना हो रही है। घरों की कोई जाति नहीं होती इसलिए फॉर्म में जाति का ऑप्शन नहीं है। जब व्यक्तियों की गणना होगी तब उसमें जाति जनगणना का सवाल आएगा।

– अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

करने के उद्देश्य से अपने विजित क्षेत्र के लोगों की जनगणना कराई। चीन में 14वीं शताब्दी में जनगणना की विस्तृत योजनाओं के कुछ साक्ष्य प्राप्त होते हैं। सभी उम्र के निवासियों को सम्मिलित करते हुए सबसे पहले पूर्ण की गई जनगणनाओं में एक जनगणना वर्ष 1449 में जर्मन शहर नूरेमबर्ग में की गई थी। 15वीं और 16वीं शताब्दी में स्विट्जरलैंड में अन्य प्रांतीय या नगरपालिका जनगणनाएं किए जाने की सूचना मिलती है। उत्तरी अमेरिका में स्पेनिश कब्जे वाले अमेरिकी क्षेत्रों में पहली जनगणना वर्ष 1576 में स्पेन के राजा फिलिप XI द्वारा कराई गई थी। यह काम वहां के मूल निवासियों द्वारा किया गया था और उनके द्वारा बनाई गई रिपोर्ट टेक्सास विश्वविद्यालय में उपलब्ध है।

कोविड के कारण जनगणना में हुई देरी

सरकार ने 2011 की जनगणना के बाद वर्ष 2021 की जनगणना के लिए सारी तैयारियां पूरी कर ली थी। उसी वक्त सदी की सबसे बड़ी महामारी, कोविड का संकट आया, जिसके कारण जनगणना संभव नहीं हो पाई। कोविड संकट समाप्त होने के बाद देश को इससे उबरने में समय लगा और अब हो रही है जनगणना 2027...

- 24 दिसंबर 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारत की जनगणना -2021 की प्रक्रिया शुरू करने तथा राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) को अपडेट करने की मंजूरी दी थी।
- कोविड-19 महामारी के प्रकोप के कारण, जनगणना 2021 और संबंधित क्षेत्र की गतिविधियों को अगले आदेश तक स्थगित कर दिया गया।
- जनगणना 2021 करवाने के लिए सरकार की मंशा 28 मार्च, 2019 को भारत के राजपत्र में अधिसूचित की गई थी।
- ऐसे में अब भारत में, बहुप्रतीक्षित जनगणना वर्ष 2027 शुरू कर दी गई है।

जनगणना 2011 के प्रमुख जनसांख्यिकीय निष्कर्ष

कुल जनसंख्या
1.21 अरब
1 मार्च, 2011 तक

पुरुषों की संख्या **62.32 करोड़**

महिलाओं की संख्या **58.76 करोड़**

93.91% साक्षरता दर के साथ केरल ने शीर्ष स्थान बरकरार रखा।

जनसंख्या वृद्धि
2001-2011 के दशक के दौरान
18.20 करोड़

2011 में बाल लिंगानुपात
प्रति 1 हजार लड़कों पर
918 लड़कियां

2011 में भारत का जनसंख्या घनत्व
382 प्रति वर्ग किमी था, दशकीय वृद्धि 17.7%।

देश में साक्षरता दर
73.0%
80.9% पुरुष
64.6% महिला

इसके बाद साक्षरता में लक्षद्वीप (91.8%) व मिजोरम (91.3%) का स्थान रहा।

जनगणना की पूरी प्रक्रिया समझें

जनगणना के सुचारू संचालन में राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वजह यह है कि आंकड़ों का संग्रह, सत्यापन, निगरानी, पर्यवेक्षण, प्रगति की समीक्षा सहित विभिन्न जमीनी स्तर की गतिविधियां जनगणना अधिनियम, 1948 और जनगणना नियम, 1990 के प्रावधानों के अंतर्गत संबंधित राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेश प्रशासनों द्वारा नियुक्त जनगणना अधिकारी करते हैं।

भारत की जनगणना 2027 CENSUS OF INDIA
जनगणना से जन कल्याण

पहली बार जनगणना डिजिटल रूप से आयोजित की जा रही है। **पहली बार** 'स्व-गणना' (Self-Enumeration) का विकल्प भी उपलब्ध है।

...इसलिए कही जा रही है जनगणना 2027

- भारत सरकार ने जनगणना 2027, 16 जून, 2025 को राजपत्र में अधिसूचित की। आप कह सकते हैं कि दो चरणों की यह जनगणना अप्रैल, 2026 से शुरू हो गई तो फिर नाम जनगणना 2027 क्यों?
- इसका जवाब है कि जो लोगों की अंतिम गिनती होगी, उसकी संदर्भ तिथि 1 मार्च, 2027 की 00:00 बजे होगी। यानी जिनका जन्म 28 फरवरी की रात 12 बजे तक होगा, वो जनगणना 2027 में गिने जाएंगे। इसी दिन और समय तक जिनकी मृत्यु हो जाएगी, उनकी गिनती इसमें नहीं होगी।
- लद्दाख संघ राज्य क्षेत्र तथा जम्मू-कश्मीर संघ राज्य क्षेत्र के बर्फ वाले असमकालिक क्षेत्रों, उत्तराखंड तथा हिमाचल प्रदेश राज्यों के मामले में बात करें तो यह संदर्भ तिथि 1 अक्टूबर, 2026 की 00:00 बजे होगी।

मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना में पूछे जाएंगे 33 प्रश्न

- मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का चरण 1 अप्रैल से 30 सितंबर, 2026 के बीच पूरे देश में संचालित किया जाएगा।
- इस छह माह की अवधि में प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र, सरकार द्वारा अधिसूचित 30 दिनों की अवधि में इस क्षेत्रीय कार्य को पूरा करेंगे।
- मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना के चरण के दौरान आवास की स्थिति, घरेलू सुविधाओं और उपलब्ध परिसंपत्तियों से संबंधित विस्तृत जानकारी एकत्र की जाएगी।
- महत्वपूर्ण संकेतकों को दर्ज करने के लिए जनवरी 2026 में प्रथम चरण के लिए कुल 33 प्रश्न अधिसूचित किए गए हैं, जो साक्ष्य-आधारित योजना निर्माण, नीति निर्धारण और लक्षित कल्याणकारी योजनाओं के लिए आधार प्रदान करते हैं।

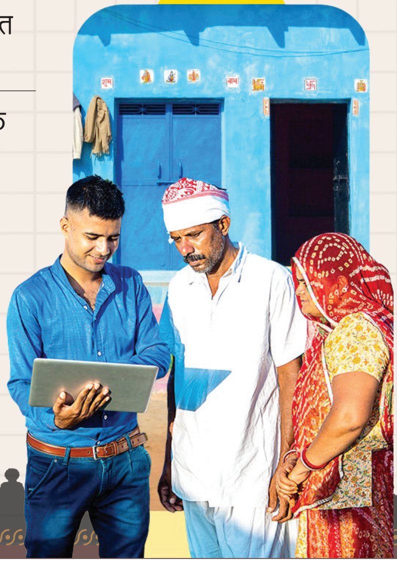

हालांकि इतिहास बताते हैं कि पहली जनगणना जैसी कोई चीज नहीं है क्योंकि शुरुआती गणनाओं में एक या एक से अधिक आधुनिक विशेषताएं शामिल थीं, परंतु कोई भी सभी विशेषताओं को शामिल करने का दावा नहीं कर सकता है। 17वीं और 18वीं शताब्दी में महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय विशेषताओं के साथ राष्ट्र की संपूर्ण जनसंख्या को शामिल करते हुए आधुनिक जनगणना का विचार उत्पन्न हुआ।

1872 से पूर्व भारत की जनगणना का इतिहास

हड़प्पा और मोहन-जो-दाड़ो की खुदाई से पता चला है कि तीसरी या चौथी सहस्राब्दी ईसा पूर्व तक और शायद उससे बहुत पहले से भी, भारत में एक अत्यधिक विकसित सभ्यता थी, जिसमें बड़े और अधिक जनसंख्या वाले शहर, अच्छी तरह से निर्मित भवन, मंदिर, ईंट से बने सार्वजनिक भवन एवं कई अन्य सुविधाएं थीं, जिसका उपयोग उस समय मेसोपोटामिया और मिस्र के लोगों

पहली बार स्व गणना...

16 भाषाओं में ऑनलाइन सुविधा...

देश की 16वीं जनगणना और आजादी के बाद 8वीं जनगणना हो रही है। यूं तो यह जनगणना हर 10 वर्ष में होती रही है लेकिन इस बार 16 वर्ष बाद हो रही है। इनसे महत्वपूर्ण इन 16 जनगणना में जो पहली बार हो रहा है, वो है डिजिटल जनगणना और स्व-गणना का नागरिकों को विकल्प देना। जनगणना (संशोधन) नियम 2022 की धारा 6डी के तहत स्व-गणना एक सुरक्षित वेब-आधारित सुविधा है, जो 16 क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध है।

- **se.census.gov.in** एक समर्पित वेब पोर्टल है जो डेस्कटॉप, लैपटॉप या मोबाइल पर आसानी से उपलब्ध है। स्व गणना देश के भीतर किसी दूरस्थ स्थान पर बैठकर भी ऑनलाइन की जा सकती है।
- यह राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में मकान सूचीकरण की शुरुआत से 15 दिन पहले आम जनता के लिए उपलब्ध होगा ताकि वे अपने परिवार का विवरण दर्ज कर सकें।
- प्रगणक पिछली जनगणनाओं की तरह सभी आवंटित हाउस लिस्टिंग ब्लॉकों में घर-घर जाएंगे, जबकि उसके पूर्व स्व-गणना एक अतिरिक्त सुविधा के रूप में काम करेगी।

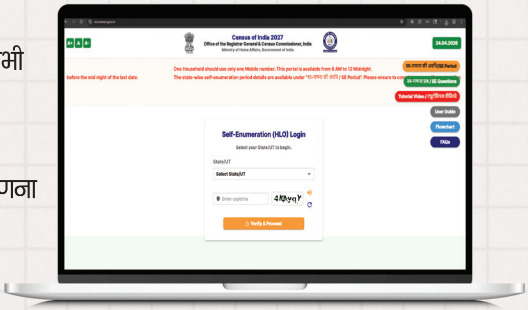

स्व गणना की ये है पूरी प्रक्रिया

स्व-गणना की वीडियो मार्गदर्शिका के लिए QR कोड स्कैन करें।

पहला सेक्शन

पोर्टल लॉगिन और प्रारंभिक पंजीकरण

पोर्टल में प्रवेश एवं लॉगिन

1 स्व-गणना में भाग लेने के लिए सबसे पहले **se.census.gov.in** पोर्टल पर जाएं। अपने राज्य या केंद्र शासित प्रदेश का चयन करें और कैप्चा कोड दर्ज करें।

परिवार का पंजीकरण

2 परिवार के मुखिया का नाम, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी (वैकल्पिक) दर्ज करें।

- परिवार के मुखिया का नाम बाद में बदला नहीं जाएगा।
- प्रत्येक परिवार के लिए केवल एक मोबाइल नंबर उपयोग किया जा सकता है। एक बार पंजीकृत होने के बाद वही मोबाइल नंबर किसी अन्य परिवार के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता।

दूसरा सेक्शन

सत्यापन एवं स्थान पहचान

भाषा चयन एवं ओटीपी सत्यापन

3 अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें तथा पंजीकृत मोबाइल नंबर पर प्राप्त ओटीपी दर्ज करें।

स्थान संबंधी विवरण दर्ज करें

4 अपने जिले का चयन करें, पिन कोड दर्ज करें, गांव/नगर/लोकैलिटी की जानकारी भरें।

मानचित्र पर अपने निवास का स्थान चिन्हित करें

5 मानचित्र पर लाल मार्कर को खींचकर (**Drag** करके) अपने आवासीय भवन के सटीक स्थान पर स्थापित करें और स्थान की पुष्टि करें।

स्व गणना करने के लिए QR कोड स्कैन करें।

तीसरा सेक्शन

डेटा दर्ज करना और अंतिम पुष्टि

प्रश्नावली पूर्ण करें

6 मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना प्रश्नावली भरें। प्रश्नों को समझने में सहायता के लिए टूलटिप्स, अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न(**FAQs**) और आवश्यक सूचना उपलब्ध है।

पूर्वावलोकन एवं समीक्षा

7 पूर्वावलोकन (**Preview**) स्क्रीन का उपयोग करके दर्ज की गई सभी जानकारी की जांच करें। आप निम्न कार्य कर सकते हैं: डेटा दर्ज करने में संशोधन के लिए वापस जाएं, बाद में प्रस्तुत करने के लिए ड्राफ्ट के रूप में सेव करें या पुष्टि करें और सबमिट करें।

अंतिम प्रस्तुतीकरण

8 पुष्टि करें और सबमिट करें, पर क्लिक करके अपने डेटा का अंतिम प्रस्तुतीकरण करें, अंतिम प्रस्तुतिकरण के बाद किसी भी प्रकार का संशोधन संभव नहीं होगा।

स्व-गणना पहचान संख्या (SE ID) का सृजन

सफलतापूर्वक फॉर्म सबमिट करने पर 11 अंकों की एक यूनीक सेल्फ-एनुमरेशन आईडी (**SE ID**) जनरेट हो जाती है, जो **H** अक्षर से प्रारंभ होती है। यह **SMS** तथा ई-मेल के माध्यम से भेजी जाएगी।

चौथा सेक्शन

क्षेत्रीय सत्यापन

प्रगणक का दौरा

9 जब जनगणना प्रगणक (**Enumerator**) आपके घर आएं, तो उनसे पुष्टि करने के लिए (**SE ID**) साझा करें।

SE ID मिलान का परिणाम

यदि **SE ID** मौजूदा रिकॉर्ड से मेल खाती है, तो आपकी जानकारी की पुष्टि कर, उसे स्वीकार कर लिया जाएगा। यदि **SE ID** का मिलान नहीं होता है, तो प्रगणक आपसे पूछकर नई जानकारी भरेंगे।

> *जाति जनगणना के इस निर्णय से आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े सभी वर्गों का सशक्तीकरण होगा, समावेशन को बढ़ावा मिलेगा और यह वंचितों की प्रगति के नए मार्ग प्रशस्त करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2026 की जनगणना जाति के साथ कराने का निर्णय किया है।*
>
> **– अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री**

द्वारा किया गया था। प्राचीन साहित्य ऋग्वेद से यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या बहुत कम थी और छोटे गांवों के रूप में विस्तृत क्षेत्रों में फैली हुई थी। घनी जनसंख्या के अस्तित्व की पुष्टि सिकंदर की सेना द्वारा की गई थी जिसने 327-326 ईसा पूर्व में भारत पर आक्रमण किया था। चंद्र गुप्त (321-297 ईसा पूर्व) के अभिलेखों से पता चलता है कि 7 लाख पुरुषों की एक स्थायी सेना थी, जिसके रखरखाव के लिए पर्याप्त जनसंख्या की आवश्यकता रही होगी। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर सुरक्षात्मक रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ईसा युग से पूर्व भारत में पर्याप्त जनसंख्या थी। बहुत शुरुआती समय से ही जनसंख्या संबंधी आंकड़े एकत्र करने के प्रयास भी किए गए थे। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य कालीन राजनीतिक प्रशासन की सबसे महान प्रतिभाशाली विभूतियों से एक कौटिल्य द्वारा विकसित प्रसिद्ध 'अर्थशास्त्र' यानी प्रशासन के सिद्धांत में कराधान के उद्देश्य के लिए जनसंख्या के आंकड़ों का संग्रह राज्य की नीति के मापक के रूप में निर्धारित की गई थी। इसमें जनसंख्या की गणना, आर्थिक और कृषि से संबंधित जनगणना करने के तरीकों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

जनसंख्या की गिनती, जिसके महत्व को प्राचीन

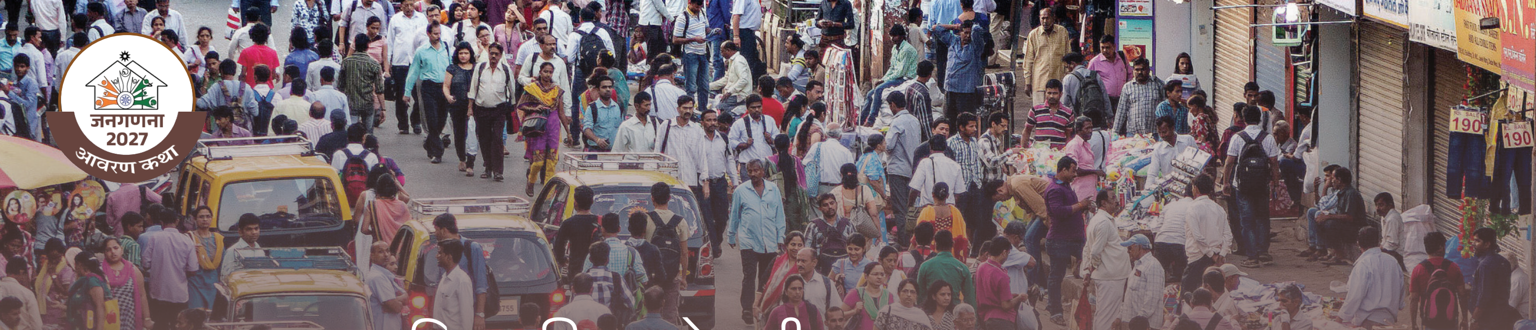

दुनिया की सबसे बड़ी जनगणना 2027...
विकसित भारत की तैयारी

जनगणना का खर्च

जनगणना की गतिविधि संघ सूची 246 और जनगणना अधिनियम 1948 के अंतर्गत संचालित की जाती है।

₹ 11,718.24 करोड़

की स्वीकृति दी है भारत सरकार ने जनगणना 2027 के लिए।

जिसमें प्रगणकों के मानदेय, प्रशिक्षण, आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर, लॉजिस्टिक्स आदि के व्यय शामिल हैं। चूंकि जनगणना संघ सूची का विषय है इसलिए यह राशि केंद्र सरकार खर्च करती है। राज्य सरकारों की जनगणना मशीनरी इसमें सहयोग करती है।

प्रशासनिक इकाइयां फ्रीज की गईं

- जनगणना की तैयारी में इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रशासनिक इकाइयों में बार-बार फेरबदल न हो। इसके लिए 1 जनवरी, 2026 से 31 मार्च 2027 तक सभी प्रशासनिक इकाइयों को स्थिर यानी फ्रीज कर दिया गया है।
- फेज-एक के लिए नवंबर, 2025 में ही प्री-टेस्ट कर लिए गए।

तैयारी की दृष्टि से **जनवरी, 2026** में राज्यों के मुख्य सचिव, स्टेट नोडल ऑफिसर और जनगणना ऑपरेशन निदेशक की कांफ्रेंस आयोजित की गई।

- पहले चरण के लिए निर्देशिका मैन्युअल 19 भाषाओं में तैयार किया गया।
- समरूपता एवं आसानी से कार्य के लिए राष्ट्रीय स्तर पर तरीका और दिशानिर्देश के सरकुलर जारी किए गए हैं।
- जनगणना कार्यों की समयबद्धता के लिए पूरे कार्यक्रम का कैलेंडर बनाया गया है जिनकी सघन मॉनिटरिंग की जा रही है।

जनगणना अधिनियम, 1948 के अंतर्गत एकत्रित समस्त आंकड़े पूर्णतः गोपनीय रखे जाते हैं और उनका उपयोग केवल सांख्यिकीय उद्देश्यों एवं विकास योजना निर्माण के लिए किया जाता है। जनगणना मशीनरी ने सभी निवासियों से अनुरोध किया है कि वह मकान सूचीकरण कार्य के दौरान प्रगणकों को पूर्ण सहयोग प्रदान करें। इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

काल में कुशल प्रशासन के द्वारा पहचाना गया था, उसे मध्यकालीन युग के दौरान उपेक्षित किया गया था जब देश का इतिहास भी कुछ हद तक अस्थिर था। लेकिन फिर से आधुनिक रूप से सरकारी तंत्र के विकसित होने के साथ जनसंख्या के वास्तविक आंकड़ों की आवश्यकता महसूस की गई। संपूर्ण भारत में एक समान आधार पर पहली पूर्ण जनगणना वर्ष 1881 में आयोजित की गई थी। उसके बाद से प्रत्येक 10 वर्ष के बाद नियमित रूप से जनगणना की जा रही है। 1901 के वर्गीकरण में जाति और व्यवसायों का विस्तृत विश्लेषण भी किया गया।

जनगणना 2027
आवरण कथा

करीब 6.40 लाख गांव में जनगणना

जनगणना 2027 का संचालन

36 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र

7,092 उप-जिले

5,128 स्टैट्यूरी टाउन यानी सांविधिक नगर

4,580 जनगणना नगर

लगभग **6,39,902** गांवों में किया जाएगा जनगणना 2027 का संचालन।

80 हजार बैच में प्रशिक्षण

विश्व की सबसे बड़ी डिजिटल जनगणना कार्य के लिए नियुक्त सभी फील्ड कर्मचारियों, जिसमें प्रगणक और पर्यवेक्षक शामिल हैं, को दिया जा रहा है पर्याप्त प्रशिक्षण...

100 राष्ट्रीय प्रशिक्षकों को विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित किया गया है।

इन राष्ट्रीय प्रशिक्षकों ने लगभग **2,000** मास्टर ट्रेनर को प्रशिक्षित किया है।

यह मास्टर ट्रेनर लगभग **45,000** फील्ड ट्रेनर को प्रशिक्षित कर रहे हैं।

यह फील्ड ट्रेनर दे रहे प्रशिक्षण

- लगभग **80,000** बैचों में
- लगभग **31** लाख प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण दे रहे हैं।

सभी प्रशिक्षण सामग्री क्षेत्रीय भाषाओं में तैयार की गई है ताकि अंतिम स्तर पर कार्यरत प्रगणक एवं पर्यवेक्षक समय पर गुणवत्तापूर्ण डेटा एकत्र कर सकें।

आजादी के बाद 1951 में पहली जनगणना संपन्न की गई थी। इस जनगणना की रिपोर्ट पूर्ववर्ती जनगणना रिपोर्टों के पैटर्न से पूरी तरह अलग थी। इस रिपोर्ट में भारत की जनसंख्या के आकार और संरचना में पिछले परिवर्तनों की व्याख्या करने और जनसंख्या के जीवन स्तर तथा उनके निहितार्थों को इंगित करने का प्रयास किया। रिपोर्ट ने देश की जन्म दर में कमी के लिए भी एक दलील दी। वर्ष 1951 में जनगणना ने भारतीय जनगणना इतिहास में पहली बार फील्ड में पुनः जांच द्वारा जनसंख्या की गणना की शुद्धता का आकलन करने का भी प्रयास किया। 1971 के बाद 2011 तक प्रत्येक 10 वर्षों के अंतराल में चार जनगणना की गई है। वर्तमान में चल रही जनगणना से पहले 2011 में जनगणना हुई थी। वर्ष 2021 में देश जनगणना के लिए तैयार था। वर्ष 1872 से निर्बाध दशकीय जनगणना के श्रृंखला क्रम में भारत की 16वीं जनगणना को डिजिटल जनगणना के रूप में शुरुआत करने के लिए प्रगणक और पर्यवेक्षक प्रशिक्षण कक्षाओं में उत्साहित थे। लेकिन जनगणना अभियान शुरू होने से ठीक एक सप्ताह पहले सदी की घातक कोविड-19 महामारी ने भारत सरकार को देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा करने के लिए मजबूर कर दिया।

जिससे जनगणना वर्ष 2021 को अघोषित तारीख तक स्थगित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। भारत अब जनगणना 2027 के माध्यम से विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि की ओर अग्रसर है।

डिजिटल जनगणना

तकनीक क्रांति का प्रतीक

उपनिषद में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय' की प्रार्थना की गई है। यानी, हम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। मृत्यु से, परेशानियों से अमृत की ओर बढ़ें। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता। इसलिए, अमृत काल का यह समय ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी, जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कारों को जीवंत रखना है, अपनी आध्यात्मिकता को, अपनी विविधता को संरक्षित और संवर्धित करना है। साथ ही, तकनीक, इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, स्वास्थ्य की व्यवस्थाओं को निरंतर आधुनिक भी बनाना है। बीते 12 वर्ष में इसी सोच को साकार करती आई केंद्र सरकार ने जनगणना 2027 को भारत की पहली पूर्णतः डिजिटल जनगणना के रूप में एक क्रांतिकारी स्वरूप दिया है। इसका उद्देश्य सही योजना बनाना और लक्ष्य केंद्रित कार्य करना है। जनगणना 2027 को कई दृष्टियों से ऐतिहासिक माना जा रहा है। इसमें तकनीकी इनोवेशन, डिजिटल डेटा संग्रहण और अधिक सटीकता पर विशेष जोर दिया जा रहा है, ताकि डेटा संग्रहण तेज, पारदर्शी और त्रुटिरहित हो सके। मोबाइल एप, ऑनलाइन फॉर्म और रीयल-टाइम डेटा प्रोसेसिंग जैसी सुविधाएं इसे आधुनिक स्वरूप प्रदान कर रही है। अब गणना केवल कागजों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि डिजिटल माध्यम से हर जानकारी सुरक्षित और त्वरित रूप से उपलब्ध होगी। इससे न केवल समय की बचत होगी, बल्कि पारदर्शिता और विश्वसनीयता भी सुनिश्चित होगी। प्रधानमंत्री

जातिगत जनगणना से समावेशी विकास होगा सुनिश्चित

जातिगत जनगणना सामाजिक न्याय और नीतिगत योजनाओं को जमीनी स्तर पर लागू करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इससे न सिर्फ वास्तविक सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने में मदद मिलेगी बल्कि इससे समावेशी विकास भी सुनिश्चित होगा। साथ ही समान अवसरों की दिशा में उठाए जा सकेंगे ठोस कदम...

30 अप्रैल 2025

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की राजनीतिक मामलों की समिति ने आगामी जनगणना में जातिवार गणना शामिल करने का निर्णय लिया।

16 जून 2025

गृह मंत्रालय ने आधिकारिक तौर पर 2027 की जनगणना की अधिसूचना जारी की।

- आजादी के बाद पहली बार वर्ष 2027 की जनगणना में सभी समुदायों की जाति को गणना में शामिल किया जा रहा है।
- सामाजिक समरसता की रक्षा के लिए, जाति गणना को अलग सर्वेक्षण के बजाय मुख्य जनगणना में ही शामिल करने का निर्णय लिया गया है।
- परिवार के प्रत्येक सदस्य की जाति से संबंधित जानकारी अंतिम बार 1931 में विस्तृत रूप से एकत्रित और प्रकाशित की गई थी।

सामाजिक-आर्थिक एवं जाति जनगणना (एसईसीसी) 2011 के बाद जाति संबंधी आंकड़ों को छोड़कर सभी आंकड़े प्रकाशित किए गए थे।

सामाजिक न्याय के लिए संकल्पित मोदी सरकार ने ऐतिहासिक निर्णय लिया है। पीएम मोदी के नेतृत्व में 30 अप्रैल 2025 को हुई CCPA की बैठक में, आगामी जनगणना में जातिगत गणना को शामिल करने का निर्णय लेकर सामाजिक समानता और हर वर्ग के अधिकारों के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता का संदेश दिया गया है।

– अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने शासन को "डेटा-ड्रिवेन गवर्नेंस" की दिशा में आगे बढ़ाया है। "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" और "मिनिमम गवर्नमेंट-मैक्सिमम गवर्नेंस" की भावना को साकार करने के लिए सटीक और प्रामाणिक डेटा आवश्यक है। यह केवल नारा नहीं, बल्कि नीति निर्माण का आधार बन चुका है। जनगणना 2027 इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह सरकार को समझने में मदद करेगी कि किन क्षेत्रों में विकास हुआ है और किन क्षेत्रों में अभी भी प्रयास की आवश्यकता है।

2011 के बाद लंबे अंतराल के पश्चात होने वाली जनगणना 2027 एक नए युग का आरंभ है। यह

केवल समय का अंतर नहीं भरती, बल्कि एक नए भारत की झलक प्रस्तुत करती है। एक ऐसा भारत जो आत्मनिर्भर, सशक्त और डिजिटल युग में अग्रणी बनने की ओर बढ़ रहा है। डेटा अब केवल आंकड़े नहीं रहे, बल्कि विकास की दिशा तय करने वाले सूत्र बन गए हैं। इसलिए डिजिटल क्रांति और जनगणना का नया स्वरूप "डिजिटल इंडिया" के युग में जनगणना 2027 एक तकनीकी क्रांति का प्रतीक बनकर उभर रही है। इस जनगणना में उपयोग किए जा रहे डिजिटल उपकरण उच्च स्तरीय डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मजबूत एन्क्रिप्शन और बहु-स्तरीय प्रमाणीकरण से युक्त हैं। पूरी जनगणना प्रक्रिया को वास्तविक समय आधार पर प्रबंधित और निगरानी करने के लिए एक समर्पित पोर्टल सेंसस मैनेजमेंट एंड मॉनिटरिंग सिस्टम (सीएमएमएस) डेवलप किया गया है। डेटा सुरक्षा को भी प्राथमिकता दी गई है।

सामाजिक समरसता

पहली बार जाति जनगणना

स्वतंत्र भारत में पहली बार, 2027 की जनगणना में सभी समुदायों की जाति गणना शामिल होगी। आजादी के बाद से अब तक की गई सभी जनगणनाओं से जाति को बाहर रखा गया है। कुछ राज्यों ने अलग-अलग पारदर्शिता और उद्देश्य के साथ जाति सर्वेक्षण किए हैं, जिससे राजनीतिकरण की चिंताएं बढ़ रही हैं। इसलिए सामाजिक समरसता की रक्षा के लिए, जाति गणना को अलग सर्वेक्षण के बजाय मुख्य जनगणना में ही शामिल करने का निर्णय लिया गया है। सभी समुदायों के लिए जाति की गणना भी इस जनगणना के साथ होगी। इसके लिए राजनीतिक मामलों की कैबिनेट समिति ने 30 अप्रैल 2025 को अपनी बैठक में आगामी जनगणना यानी जनगणना 2027 में जाति गणना को शामिल करने का निर्णय किया था। देश में भारी सामाजिक और जनसांख्यिकीय विविधता तथा संबंधित चुनौतियों के साथ, जनगणना 2027 के दूसरे चरण यानी जनसंख्या गणना (पीई) में जाति डेटा को इलेक्ट्रॉनिक रूप से शामिल किया जाएगा। दूसरे चरण के लिए प्रश्नावली जब जारी की जाएगी, तब उसमें जाति से जुड़े प्रश्न शामिल किए जाएंगे।

जनगणना 2027 में समाहित सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास... की भावना

सबका साथ

जनगणना संघीय सूची का विषय है जिसमें राज्य व संघीय राज्यों की पूरी मशीनरी मिलकर काम करती है। इस पूरे अभियान में 'टीम इंडिया' सबका साथ की भावना से काम करती है ताकि फुलप्रूफ डेटा एकत्रित हो।

सबका विकास

जनगणना में एकत्रित आंकड़ों में इस बार जातिगत जनगणना को शामिल किया गया है ताकि पिछड़े या वंचितों के आंकड़े सामने आएं, उससे सबके विकास की योजनाओं पर काम करने में आसानी होगी।

सबका विश्वास

जनगणना में डेटा की सुरक्षा को इस तरह सुनिश्चित किया गया है कि आम नागरिकों का विश्वास न टूटे, तो वहीं इस अभियान में आमजन जो बताते हैं, उसका विश्वास किया जाता है, उसे सच माना जाता है। यह सबका विश्वास की भावना को सामने रखता है। फिर इस बार डिजिटल जनगणना की वजह से डेटा सटीक होगा और जल्दी भी उपलब्ध होगा।

सबका प्रयास

जनगणना अब एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ रही है। यह पहला मौका है जब स्व-गणना यानी डिजिटल रूप में खुद अपने मकान, परिवार की जानकारी भरने का मौका दिया गया है। इसी तरह जागरुकता कार्यक्रम भी किए गए हैं। यही सबका प्रयास विकसित भारत का आधार भी है।

आशंका न करें... सच्चाई जानें !

चलो निभाएं अपनी जिम्मेदारी, करें जनगणना में भागीदारी

अफवाह प्रगणक ओटीपी और बैंक डिटेल मांगेगे।

सच्चाई जनगणना के किसी भी कर्मचारी को, न तो ओटीपी देना है और न ही कोई दस्तावेज जमा करना है।

अफवाह आपका डेटा टैक्स या जांच के लिए इस्तेमाल होगा।

सच्चाई आपका डेटा गोपनीय है। इसका उपयोग योजना, नीति आदि के उद्देश्य से किया जाता है।

अफवाह जनगणना से आपके सरकारी लाभ प्रभावित हो सकते हैं।

सच्चाई आपकी लाभार्थी स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अफवाह जनगणना के लिए आपको शुल्क देना पड़ सकता है।

सच्चाई जनगणना पूरी तरह से नि:शुल्क है। एचएलओ या स्व-गणना के लिए कोई शुल्क नहीं देना होता।

अफवाह कोई भी व्यक्ति प्रगणक बनकर आ सकता है।

सच्चाई आप हमेशा QR सत्यापन के साथ आधिकारिक पहचान पत्र जांच सकते हैं।

जनगणना के दौरान दिया गया व्यक्तिगत डेटा पूरी तरह गोपनीय होता है। इसे आरटीआई के तहत साझा नहीं किया जा सकता, न ही इसे अदालत में साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है और न ही किसी प्राधिकरण द्वारा व्यक्तिगत डेटा का उपयोग किया जा सकता है, इसका उपयोग केवल सांख्यिकीय संकलन के लिए होता है।

– मृत्युंजय कुमार नारायण

भारत के रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त

जनगणना 2027 की प्रेस कॉन्फ्रेंस देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

विकसित भारत की यात्रा का आधार

जनगणना-2027 के शुभंकर "प्रगति" (महिला प्रगणक) और "विकास" (पुरुष प्रगणक) को मैत्रीपूर्ण और सहज प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। "प्रगति" और "विकास" 2047 में भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूरा करने में महिलाओं और पुरुषों की बराबर की भागीदारी के भी प्रतीक हैं। स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने पर 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा गया है। अमृत महोत्सव वर्ष से शुरू हुई इस पूरी यात्रा को अमृत काल का नाम दिया गया है। इसलिए जनगणना 2027 केवल नागरिकों की गिनती भर की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि विकसित भारत की दिशा तय करने का

2011 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर आमजन तक बिजली पहुंचाने से लेकर शौचालय तक 22 विभिन्न योजनाओं पर कार्य किया गया। उज्ज्वला योजना में उपयोग हुआ और परिवारों को सिलेंडर दिया गया। 2011 की जनगणना के आधार पर हरियाणा में लिंग अनुपात की दिशा में सुधारात्मक काम किए गए हैं।

– अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

एक मजबूत आधार है। इस लक्ष्य को साकार करने में सही नीतियां, सटीक आंकडे महत्वपूर्ण होते हैं। इससे न केवल सटीक योजना और नीति निर्माण में सहायता मिलती है, बल्कि संसाधनों का समान वितरण, आधारभूत ढांचे का विकास, सामाजिक-आर्थिक समानता जैसे पहलू में महत्वपूर्ण होता है। विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने में तकनीक की भूमिका महत्वपूर्ण है। ऐसे में डिजिटल जनगणना से आने वाले आंकड़े तेजी से और सटीक होंगे। इससे केंद्र सरकार को भविष्य की योजना बनाने में सहायता मिलेगी। इसलिए यह स्पष्ट है कि जनगणना 2027 विकसित भारत के सपने को साकार करने में एक नींव का काम करेगा। यह नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में एक रणनीतिक कदम सिद्ध होगा।

निश्चित रूप से जनगणना शासन का एक महत्वपूर्ण साधन है, जो अगले दशक के लिए भारत की विकास योजना का आधार प्रदान करती है। ऐसे में जनगणना 2027 केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह सरकार और समाज के बीच एक सेतु का कार्य करती है। इसलिए जनगणना 2027 को केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया भर नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह एक जन आंदोलन है, एक ऐसा अभियान है जिसमें प्रत्येक नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। इसलिए नागरिकों का भी कर्तव्य है कि इस राष्ट्रीय यज्ञ में सही जानकारी देकर, जागरूकता पैदा कर अपनी आहुति दें, ताकि जनभागीदारी ही सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की आधारशिला बने। ■

गंगा एक्सप्रेसवे

नए सपनों और अवसरों का गेटवे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 28 और 29 अप्रैल को उत्तर प्रदेश का दौरा केवल एक प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और विकासात्मक प्रतिबद्धताओं का जीवंत प्रतीक रहा। दुनिया के सबसे प्राचीन जीवित शहरों में शामिल वाराणसी, अब आधुनिक विकास और पारंपरिक विरासत के अनूठे संगम की ओर अग्रसर है। सरकार की प्राथमिकताओं में 'विकास और विरासत' को साथ लेकर चलने की कड़ी में पीएम मोदी ने श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन और पूजा अर्चना की तो गंगा एक्सप्रेसवे सहित हजारों करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का किया लोकार्पण और शिलान्यास...

उत्तर प्रदेश आज 1 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनने के लिए आगे बढ़ रहा है लेकिन एक समय था जब इस राज्य को पिछड़ा प्रदेश कहा जाता था। यह एक बहुत बड़ा लक्ष्य है और इस लक्ष्य को पाने की प्रदेश में क्षमता है। इंफ्रास्ट्रक्चर विकास से लेकर मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने के लिए यहां बड़े काम हो रहे हैं। निवेश के लिए बड़ी-बड़ी कंपनियां यहां आ रही हैं, जिससे यहां प्रगति की रफ्तार तेज होगी। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी खुलेंगे। आधुनिक प्रगति के इस दौर में गंगा एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश के विकास की नई लाइफ लाइन बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मुझे खुशी है कि यूपी सरकार ने इस एक्सप्रेसवे का नाम मां गंगा के नाम पर रखा है। इसमें विकास का विजन भी झलकता है और विरासत के भी दर्शन होते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अक्सर कहते हैं कि जिस परियोजना का उनकी सरकार शिलान्यास करती है उसका उद्घाटन भी करती है। गंगा एक्सप्रेसवे भी इसका एक उदाहरण है। दिसंबर 2021 में पीएम मोदी ने शाहजहांपुर में इस एक्सप्रेसवे का शिलान्यास किया था। पांच साल से भी कम समय में 29 अप्रैल 2026 को हरदोई से इसका उद्घाटन भी कर दिया गया। एक ओर गंगा एक्सप्रेसवे का निर्माण पूरा हुआ है, तो दूसरी ओर इसके विस्तार की योजना पर काम भी शुरू हो गया है। जल्द ही, गंगा एक्सप्रेसवे, मेरठ से आगे बढ़कर हरिद्वार तक पहुंचेगा। इसके और बेहतर उपयोग के लिए फरुखाबाद लिंक एक्सप्रेसवे का निर्माण कर इसे अन्य एक्सप्रेसवे से भी जोड़ा जाएगा। पीएम मोदी ने कहा कि यह एक्सप्रेसवे केवल एक हाइस्पीड सड़क नहीं है। यह नई

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

काशी के सांसद के तौर पर... देश के प्रधानमंत्री के तौर पर... मुझे देशहित के एक बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपका आशीर्वाद चाहिए...और यह बड़ा लक्ष्य है, लोकसभा-विधानसभा में महिलाओं के लिए आरक्षण को लागू करना। **– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

विकसित भारत का मजबूत स्तंभ 'नारी शक्ति'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में एक विशाल महिला सम्मेलन को संबोधित किया। राष्ट्र-निर्माण में महिलाओं की अहम भूमिका पर जोर देते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने 'नारी शक्ति' को 'विकसित भारत' का सबसे मजबूत स्तंभ बताया। पीएम मोदी ने लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू करने के एक बड़े राष्ट्रीय लक्ष्य को हासिल करने के लिए वहां मौजूद लोगों का आशीर्वाद मांगा और भरोसा दिलाया कि आरक्षण के अधिकार को हकीकत बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने महिला सम्मेलन के कार्यक्रम से ही लगभग 6,350 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि जब घर में कोई महिला सशक्त होती है, तो पूरे परिवार को ताकत मिलती है। इससे समाज और देश भी मजबूत होता है। उन्होंने बताया कि 25 साल पहले जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे, तब उन्होंने लड़कियों के लिए दो अग्रणी योजनाएं शुरू की थी। पहला 'शाला प्रवेशोत्सव' ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ज्यादा से ज्यादा लड़कियां स्कूल जाएं और अपनी पढ़ाई पूरी करें। दूसरा 'मुख्यमंत्री कन्या केलवाणी निधि' ताकि उनकी फीस में मदद मिल सके। उन्होंने कहा, 'तब से लेकर आज तक, हमारी सरकार की नीतियों में महिलाओं के कल्याण को लगातार सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।'

आर्थिक सशक्तीकरण के महत्व पर जोर देते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जब महिलाओं की आर्थिक शक्ति बढ़ती है, तो घर-परिवार में उनकी आवाज भी उतनी ही मजबूत हो जाती है। पिछले 11 वर्षों में, लगभग 10 करोड़ महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा गया है जिनमें काशी की लगभग 1.25 लाख बहनें शामिल हैं। लाखों रुपये की आर्थिक सहायता ने उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करने में सक्षम बनाया है। इन प्रयासों के माध्यम से अब तक 3 करोड़ बहनें 'लखपति दीदी' बन चुकी हैं, जिनमें वाराणसी की हजारों बहनें भी शामिल हैं।

वाराणसी को उपहार

1,050 करोड़ रुपये से अधिक खर्च से तैयार वाराणसी की 48 परियोजनाएं।

- वाराणसी-आजमगढ़ सड़क का विस्तारीकरण करना।
- कज्जाकपुरा और कादीपुर में रेल ओवरब्रिज।
- भगवानपुर में 55 एमएलडी का सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

दो नई अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को दिखाई हरी झंडी

- दो नई अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को दिखाई हरी झंडी : वाराणसी-पुणे (हडपसर) और अयोध्या-मुंबई (लोकमान्य तिलक टर्मिनस)। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बीच संपर्क बढ़ेगा।
- वाराणसी-पुणे सेवा से काशी विश्वनाथ धाम तक पहुंचना आसान होगा, जबकि अयोध्या-मुंबई सेवा से श्री राम मंदिर तीर्थ क्षेत्र तक संपर्क बेहतर होगा और प्रमुख धार्मिक स्थलों के बीच कनेक्टिविटी सुदृढ़ होगी।

आधारशिला वाराणसी जंक्शन-पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन तीसरी और चौथी रेलवे लाइन परियोजना। गंगा नदी पर रेल-सह-सड़क पुल का निर्माण। इससे काशी विश्वनाथ धाम, रामनगर क्षेत्र और राष्ट्रीय राजमार्ग-19 तक पहुंच में सुधार होगा, पूर्वी यूपी और बिहार से रेल संपर्क मजबूत होगा।

श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

संभावनाओं, नए सपनों और नए अवसरों का गेटवे है।

गंगा एक्सप्रेसवे यूपी के एक छोर को दूसरे छोर से तो जोड़ेगा ही, साथ ही यह एनसीआर की असीम संभावनाओं को भी करीब लाएगा। गंगा एक्सप्रेसवे पर गाड़ियां तो दौड़ेंगी ही, इसके किनारे नए औद्योगिक अवसर विकसित होंगे। इसके लिए हरदोई जैसे दूसरे जिलों में इंडस्ट्रियल कॉरिडोर विकसित किए जा रहे हैं। इससे हरदोई, शाहजहांपुर, उन्नाव समेत सभी 12 जनपदों में नए उद्योग आएंगे। अलग-अलग सेक्टर जैसे फार्मा, टेक्सटाइल आदि के क्लस्टर विकसित होंगे।

औद्योगिक विकास

उत्तर प्रदेश का औद्योगिक विकास आज भारत की सामरिक ताकत भी बन रहा है। देश के दो डिफेंस कॉरिडोर में से एक उत्तर प्रदेश में है। रक्षा क्षेत्र की बड़ी-बड़ी कंपनी यहां अपनी फैक्टरी लगा रहीं हैं। ब्रह्मोस जैसी मिसाइलें, जिनका लोहा दुनिया मानती है, यूपी में बन रहीं हैं। रक्षा उपकरणों के निर्माण में जो छोटे-छोटे पार्ट्स चाहिए, उनकी सप्लाई के लिए एमएसएमई को काम मिलता है। इसका बहुत बड़ा लाभ उत्तर प्रदेश के एमएसएमई सेक्टर को हो रहा है।

विकास का हाइवे...

गंगा एक्सप्रेसवे से किसानों की आय बढ़ेगी और रोजगार भी होंगे सृजित

36,230 करोड़ रुपये की लागत से तैयार हरदोई जिले में गंगा एक्सप्रेसवे का उद्घाटन।

- 594 किलोमीटर लंबे 6 लेन वाले इस एक्सप्रेसवे को 8 लेन तक विस्तारित किया जा सकता है।
- यह एक्सप्रेसवे 12 जिलों-मेरठ, बुलंदशहर, हापुड़, अमरोहा, संभल, बदायूं, शाहजहांपुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़ और प्रयागराज से होकर गुजरता है।
- इन 12 जिलों में लगभग 2,635 हेक्टेयर क्षेत्र में एकीकृत विनिर्माण और लॉजिस्टिक गलियारा विकसित किया जाएगा।
- किसानों को शहरी और निर्यात बाजारों तक सीधी पहुंच मिलेगी और बेहतर मूल्य प्राप्त होगा।
- नए आर्थिक अवसर खुलने और पूरे क्षेत्र में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होने की भी उम्मीद है।
- एक्सप्रेसवे के शुरू होने से मेरठ और प्रयागराज के बीच यात्रा का मौजूदा समय 10-12 घंटे से घटकर लगभग 6 घंटे हो जाएगा।
- इस एक्सप्रेसवे पर शाहजहांपुर जिले में 3.5 किलोमीटर लंबी आपातकालीन लैंडिंग सुविधा (हवाई पट्टी) का निर्माण किया गया है।

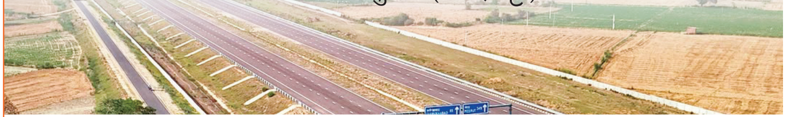

₹5,300 करोड़ की 112 से अधिक परियोजनाओं की आधारशिला...

- अमृत 2.0 के तहत 13 सीवरेज और जलापूर्ति योजनाएं।
- श्री शिव प्रसाद गुप्ता संभागीय जिला अस्पताल में 500 बिस्तरों वाला बहु-विशेषज्ञ अस्पताल।
- भोजुवीर और सिगरा में बाजार परिसरों और कार्यालयों का निर्माण, तालाबों का जीर्णोद्धार।
- 198 बिस्तरों वाले अस्पताल का पुनर्निर्माण, 100 बिस्तरों वाले गहन चिकित्सा ब्लॉक का निर्माण।
- अस्सी घाट, दशाश्वमेध घाट और नमो घाट सहित प्रमुख घाटों पर पर्यटन सुविधाओं का विकास शामिल। नगर निगम कार्यालय भवन, सरकारी बाल आश्रय गृह और किशोर न्याय बोर्ड की आधारशिला।

सामुदायिक परियोजनाओं का उद्घाटन

- जल जीवन मिशन के अंतर्गत 30 ग्रामीण पेयजल योजनाएं।
- चंद्रावती घाट का पुनर्विकास, सारनाथ के पास सारंगनाथ मंदिर का पर्यटन विकास।
- तिब्बती अध्ययन केंद्रीय विवि में सोवा रिग्पा भवन और अस्पताल का उद्घाटन।

वैश्विक पर्यटन और सांस्कृतिक स्थल का केंद्र बना पूर्वोत्तर

पूर्वोत्तर आज नए भारत की भावना यानी 'सशक्त, जुड़ा हुआ और भविष्य के लिए तैयार' का प्रतिनिधित्व करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन से प्रेरित होकर, यह सीमांत क्षेत्र से अग्रणी क्षेत्र में परिवर्तित हो गया है, जो आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धा का प्रतीक है। इंफ्रास्ट्रक्चर, निवेश, शासन और युवाओं के जुड़ाव में रिकॉर्ड वृद्धि हासिल की है। इसी को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 27 और 28 अप्रैल को सिक्किम के दौरे पर रहे। इस दौरान 4,000 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का किया उद्घाटन और शिलान्यास...

ऑर्किड्स का गार्डन और पूरब का स्वर्ग सिक्किम का अप्रतिम सौंदर्य, यहां की शांति, यहां का आध्यात्मिक आनंद, देश भर के प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। देश में जब राजनीतिक स्वार्थ के चलते भाषावाद, प्रांतवाद, ऊंच-नीच और भेदभाव की कोशिश हो रही है, तब सिक्किम 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का दर्शन करा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो दिवसीय सिक्किम यात्रा राज्य बनने की स्वर्ण जयंती के वर्ष में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह यात्रा सिक्किम तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के तीव्र और सतत विकास के प्रति वर्तमान केंद्र सरकार की निरंतर प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। यह विकास और विरासत को साथ लेकर चलने की यात्रा है। सिक्किम की अनेक पीढ़ियों ने इस यात्रा को आगे बढ़ाया है। पीएम मोदी ने कहा कि सिक्किम या नॉर्थ ईस्ट केवल देश का एक हिस्सा ही नहीं है, बल्कि यह भारत की 'अष्ट लक्ष्मी' भी हैं। इसलिए, केंद्र सरकार 'एक्ट ईस्ट' की पॉलिसी पर तो काम कर ही रही है, साथ ही नॉर्थ ईस्ट के लिए 'एक्ट फास्ट' का संकल्प भी लिया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसी संकल्प को आगे बढ़ाते हुए न सिर्फ सिक्किम राज्य की स्थापना के 50वें वर्ष के समापन समारोह में शामिल हुए बल्कि राज्य के बुनियादी ढांचे, संपर्क, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, शहरी विकास, पर्यावरण, पर्यटन और कृषि सहित कई क्षेत्रों से जुड़ी 30 से अधिक परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इन परियोजनाओं से न सिर्फ राज्य का वर्तमान बल्कि भविष्य के विकास के लिए भी मजबूत आधार तैयार होगा। सिक्किम का क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का एक परसेंट से भी कम है लेकिन

राज्य के लोगों का जीवन होगा और आसान...

30 बिस्तर वाले सोवा रिग्पा अस्पताल का एनआईटी देवराली में उद्घाटन।

- यांगंग में सिक्किम विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर का उद्घाटन।
- चाकुंग में नेताजी सुभाष चंद्र बोस उत्कृष्टता विश्वविद्यालय के प्रशासनिक ब्लॉक की शुरुआत।
- गंगटोक के सोचेयगांग में हेलेन लेपचा मेडिकल कॉलेज की शुरुआत।
- ग्यालशिंग के डेंटम में व्यावसायिक कॉलेज।
- ग्याथंग में मॉडल आवासीय स्कूल।
- मंगन जिले के मंगशिला में मॉडल डिग्री कॉलेज।

160 सिक्किम के स्कूलों में आईटी-सक्षम शैक्षिक इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजना के कार्यान्वयन की शुरुआत।

- किचुदुमरा होते हुए बिरधांग से नामची तक जाने वाली सड़क का विस्तारीकरण और सुदृढ़ीकरण।
- गंगटोक में ट्रांसमिशन और वितरण (टीएंडडी) नेटवर्क में सुधार के लिए परियोजना का उन्नयन और नवीनीकरण।
- लुम्से में जन सेवा सचिवालय (मिनी सचिवालय) और गंगटोक में सिविल सेवा अधिकारी संस्थान का उद्घाटन।
- सिक्किम शहरी गरीब आवास योजना, पुलिस कर्मियों के लिए आवास और एसएपी पांगथांग में ग्रेड 'सी' क्वार्टर सहित आवास परियोजनाओं का उद्घाटन।
- गंगटोक के जोन III में रोरो चू नदी के माध्यम से रानी चू नदी के प्रदूषण नियंत्रण योजना का भी उद्घाटन।
- गंगटोक में रिज प्रीसिंक्ट के पुनर्विकास, सोरेंग के डोडक में पर्यावरण-पर्यटन और तीर्थ यात्रा इंफ्रास्ट्रक्चर, कैलाश मानसरोवर यात्रा से संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर और नामफिंग के कृष्णा प्रणामी मंगल धाम में यात्री निवास का उद्घाटन।
- आईएफएफसीओ प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन, जिससे कृषि प्रसंस्करण को बढ़ावा मिलेगा।
- पाकयोंग जिले के माइनिंग, रंगपो में इंडोर क्रिकेट सुविधाओं का भी उद्घाटन।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

सिक्किम में युवाओं के साथ फुटबॉल खेलते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

तैयार हो रहा भविष्य का मजबूत आधार...

100 बिस्तर वाले आयुर्वेद अस्पताल की नामची में आधारशिला।

- सिरवानी और लोअर समदोंग में तीस्ता नदी पर बने दो दोहरे लेन वाले स्टील मेहराबदार पुलों की आधारशिला। नामची और गंगटोक जिले आपस में जुड़ेंगे।
- सद्भाव मंडप (सार्वजनिक उपयोगिता केंद्र) की आधारशिला।
- नदी प्रदूषण नियंत्रण पहल के अंतर्गत सिंगतम कस्बे में सीवरेज प्रणाली के पुनर्निर्माण की आधारशिला।
- ग्यालशिंग जिले के सिलनोन में पर्यावरण-तीर्थयात्रा परिसर की आधारशिला।

देश की 25 परसेंट से ज्यादा फ्लोरल डायवर्सिटी सिक्किम में मिलती है। यहां पक्षियों की करीब 500 प्रजातियां, बटरफ्लाई की करीब 700 प्रजातियां, खूबसूरत फॉरेस्ट कवर, कंचनजंगा का अद्भुत आकर्षण है। यही वजह है कि हर कोई बार-बार सिक्किम आना चाहता है।

सिक्किम की बड़ी ताकत यहां की पर्यटन अर्थव्यवस्था है। टूरिज्म तभी बढ़ता है, जब राज्य का इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़िया हो। यही वजह है कि सिक्किम की कनेक्टिविटी और इंफ्रास्ट्रक्चर पर ज्यादा फोकस किया जा रहा है। बीते वर्षों में यहां सैकड़ों किलोमीटर हाइवे का निर्माण हुआ है। गांव-गांव तक सड़कों को पहुंचाने के लिए तेजी से काम चल रहा है। बागडोगरा से गंगटोक तक एक्सप्रेसवे का निर्माण हो या सेवोक-रंगपो रेल लाइन, ये प्रोजेक्ट सिक्किम को पूरे देश से जोड़ने का जरिया बन रहे हैं। यहां नए राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण कराया जा रहा है। सरकार के इन प्रयासों से सिक्किम आने वाले पर्यटकों की संख्या और बढ़ेगी। यहां के लोगों की आमदनी में भी वृद्धि होगी। ■

न्यूजीलैंड में भारतीय निर्यात शुल्क मुक्त... आएगा 20 अरब डॉलर का निवेश

भारत और न्यूजीलैंड के बीच पुराने और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। दोनो देशों के बीच कॉमनवेल्थ विरासत, लोकतांत्रिक परंपराएं, कानूनी व्यवस्था और खेलों में भी जुड़ाव है। राजनीतिक, व्यापार, रक्षा, शिक्षा, पर्यटन, संस्कृति और खेल के क्षेत्रों में लगातार सहयोग बढ़ रहा है। इसी कड़ी में 27 अप्रैल, 2026 को सबसे तेजी से संपन्न व्यापार मुक्त समझौतों में से एक भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते पर दोनों देशों ने नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए। इस एफटीए से भारतीय निर्यात पर शुल्क हटेगा, 20 अरब डॉलर का निवेश आएगा तो वहीं छात्रों एवं कुशल पेशेवरों के लिए अवसरों का होगा विस्तार...

भारत की अर्थव्यवस्था लगातार नई ऊंचाई छू रही है। निर्यात नित नए रिकॉर्ड बना रहा है। वित्त वर्ष 2025-26 में भारत का माल और सेवा निर्यात रिकॉर्ड 860.09 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 4.22 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। वैश्विक व्यवधानों के बावजूद इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, रत्न एवं आभूषण और कृषि आधारित उत्पादों जैसे क्षेत्रों ने निर्यात की गति को बनाए रखा है। इसका सबसे बड़ा कारण है बीते कुछ वर्षों में मुक्त व्यापार समझौतों से वैश्विक स्तर पर भारतीय बाजार को विस्तार मिलना। भारत ने 27 अप्रैल को नई दिल्ली के भारत मंडपम में न्यूजीलैंड के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए जो बीते वर्षों में 38 विकसित देशों के साथ भारत

> *यह आधुनिक और संतुलित समझौता दोनों देशों की ताकतों को जोड़कर सामूहिक विकास को बढ़ावा देगा। इससे किसानों, कारीगरों, युवाओं, उद्यमियों, महिलाओं और एमएसएमई के लिए नए अवसर खुलेंगे। कृषि, मैन्युफैक्चरिंग, तकनीक, शिक्षा और सेवाओं जैसे क्षेत्रों में वैश्विक बाजार तक पहुंच बढ़ेगी।*
>
> **– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

का नौवां समझौता है। यह समझौता मजबूत आर्थिक साझेदारी को बढ़ावा देगा, निवेश को प्रोत्साहित करेगा।

भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और न्यूजीलैंड के व्यापार एवं निवेश मंत्री टॉड मैक्ले ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते से भारतीय निर्यात पर शुल्क हटेगा, जिससे श्रम प्रधान क्षेत्रों को बढ़ावा मिलेगा। इससे लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को मजबूती मिलेगी। साथ ही कृषि और डेयरी जैसे सेक्टरों को पूर्ण संरक्षण भी सुनिश्चित होगा। यह समझौता छात्रों तथा कुशल पेशेवरों के लिए अवसरों का विस्तार करेगा। कृषि उत्पादकता और निवेश प्रतिबद्धताओं को भी सहायता प्राप्त होगी। गैर-टैरिफ बाधाओं को समाप्त करके, यह मुक्त व्यापार समझौता हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की रणनीतिक आर्थिक उपस्थिति को मजबूत करेगा। यह समझौता 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की दिशा में नई सोच का भी प्रमाण है। यह समझौता दोनों देशों की घरेलू प्रक्रियाएं पूरी होने और मंजूरी मिलने के बाद लागू होगा।

खुलेंगे नए अवसर...

भारत-न्यूजीलैंड के बीच हुए समझौते के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संदेश में कहा कि यह भारत की वैश्विक भागीदारी और साझा समृद्धि की दिशा में एक ऐतिहासिक दिन है। भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हमारे मजबूत होते आर्थिक संबंधों, आपसी विश्वास और साझा लक्ष्यों का प्रतीक हैं। दोनों देशों के लोगों, खासकर युवाओं को हार्दिक बधाई, जो हमारी अर्थव्यवस्थाओं की ताकत हैं। यह आधुनिक और संतुलित समझौता दोनों देशों की ताकतों को जोड़कर सामूहिक विकास को बढ़ावा देगा। इससे किसानों, कारीगरों, युवाओं, उद्यमियों, महिलाओं और एमएसएमई के लिए नए अवसर खुलेंगे। कृषि, विनिर्माण, तकनीक, शिक्षा और सेवाओं जैसे क्षेत्रों में वैश्विक बाजार तक पहुंच बढ़ेगी। कृषि उत्पादकता साझेदारी और उत्कृष्टता केंद्रों के माध्यम से न्यूजीलैंड की आधुनिक कृषि विशेषज्ञता और भारत की प्राथमिकताओं को जोड़ा जाएगा। इससे उत्पादकता, बुनियादी ढांचे और किसानों की आय में सुधार होगा। पिछले एक दशक में भारत वैश्विक विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला का बड़ा हिस्सा बनने की दिशा में काम कर रहा है। यह समझौता कौशल, प्रतिभा और गतिशीलता के महत्व को मान्यता देता है। इससे कुशल पेशेवरों, युवाओं और छात्रों के लिए नए अवसर बढ़ेंगे। यह समझौता दोनों देशों की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों, जैसे जैविक उत्पाद, आयुष और योग को वैश्विक पहचान देगा। इससे हमारी परंपराएं भविष्य के अवसरों से जुड़ेंगी। दोनों देश अपनी ताकतों को मिलाकर मजबूत आपूर्ति श्रृंखला बनाएंगे और सस्ते व प्रतिस्पर्धी वस्तु एवं सेवाएं तैयार करेंगे। इससे विकास के नए रास्ते खुलेंगे।

समझौते से व्यापार में बढ़ी और संभावनाएं

भारत और न्यूजीलैंड के बीच वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार वर्ष 2024 में **2.4** अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया।

वित्त वर्ष 2024-25 में दोनों देशों का द्विपक्षीय वस्तु व्यापार 1.3 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। यह पिछले वर्ष की तुलना में 49 प्रतिशत अधिक है। इस एफटीए के बाद व्यापार और बढ़ने की उम्मीद है।

जैविक उत्पादों का बढ़ेगा व्यापार

पारस्परिक मान्यता समझौते के जरिए जैविक उत्पादों के व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। पहले चरण में पारस्परिक मान्यता व्यवस्था (एमआरए) लागू होगी। एमआरए लागू होने के बाद बासमती चावल, अलसी, अरेबिका चेरी, इसबगोल, सोयाबीन तेल खली और जैविक काली चाय जैसे उत्पादों की मांग बढ़ने की उम्मीद है।

घनिष्ठ जन-संबंधों की प्रतिबद्धता होगी मजबूत

समझौते के बाद संदेश में न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन ने इसे 'एक पीढ़ी में एक बार होने वाला समझौता' बताया, जिससे न्यूजीलैंड के निर्यातकों को भारत के 140 करोड़ आबादी वाले बाजार तक व्यापक पहुंच मिलेगी। इससे बाजार पहुंच का विस्तार होगा, निर्यात वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा और कृषि जैसे क्षेत्रों में सहयोग संभव होगा। साथ ही, यह स्थिर, नियम-आधारित व्यापार और

भारत ने किए 6 साल में 9 एफटीए

भारत-न्यूजीलैंड एफटीएम – अप्रैल, 2026
सबसे तेजी से होने वाला एफटीए - 9 महीने में पूरा

इंडिया-यूएस अंतरिम ट्रेड फ्रेमवर्क – फरवरी, 2026
भारत-अमेरिका के बीच व्यापार समझौते की दिशा में एक कदम

भारत-ईयू एफटीए – जनवरी, 2026
27 यूरोपीय संघ सदस्य देशों के साथ सबसे बड़ा व्यापार समझौता

भारत-ओमान सीईपीए – दिसंबर, 2025
जीसीसी देशों के साथ सबसे ज्यादा टैरिफ कवरेज वाला समझौता

भारत-यूके सीईटीए – जुलाई, 2025
भारत के 99% निर्यात को शुल्क मुक्त पहुंच

भारत-ईएफटीए टईपीए – मार्च, 2024 से अक्टूबर, 2025
100 अरब डॉलर के एफडीआई प्रतिबद्धता वाला ऐतिहासिक समझौता

भारत-ऑस्ट्रेलिया ईसीटीए – दिसंबर,2022
भारत का पहला समझौता, जिसमें 100% शुल्क समाप्ति की व्यवस्था

भारत-यूएई सीईपीए – मई,2022
वित्त वर्ष 2024-25 में द्विपक्षीय व्यापार 100 अरब डॉलर के पार

भारत-मॉरीशस सीईपीए – 2021
अफ्रीकी देश के साथ भारत का पहला व्यापार समझौता

घनिष्ठ जन-संबंधों के प्रति साझा प्रतिबद्धता को भी मजबूत करेगा। वहीं न्यूजीलैंड के व्यापार एवं निवेश मंत्री टॉड मैक्ले ने बताया कि न्यूजीलैंड की लगभग 6 प्रतिशत आबादी की जड़ें भारत से जुड़ी हैं। भारतीय प्रवासी व्यापार, शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति, खेल और सार्वजनिक जीवन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यह समझौता वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों में हो रहे बदलावों के दौर में हुआ है, जहां विश्वसनीय साझेदारियां और भी महत्वपूर्ण हो गई हैं। न्यूजीलैंड भारत को क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक मजबूती और साझा समृद्धि को बढ़ावा देने में एक प्रमुख भागीदार मानता है।

भारत-न्यूजीलैंड एफटीए नौ महीने में फाइनल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन की द्विपक्षीय बैठक की पूर्व संध्या पर 16 मार्च, 2025 को आधिकारिक तौर पर एफटीए को लेकर बातचीत शुरू हुई थी। पांच औपचारिक

समझौते के प्रमुख बिंदु

20 अरब अमेरिकी डॉलर

निवेश का वादा न्यूजीलैंड ने भारत में कृषि, विनिर्माण उद्योग, ढांचागत विकास, स्टार्ट-अप, आविष्कारक और उभरती टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने के लिए किया है।

- न्यूजीलैंड ने अब तक की सबसे बेहतरीन बाजार पहुंच और सेवाओं की पेशकश की है। इससे कुशल पेशेवरों, स्टार्ट-अप और सेवा-आधारित उद्यमों के लिए उच्च-मूल्य वाले अवसर खुलेंगे। 118 सेवा क्षेत्र में पहुंच दी है तो वहीं 139 उप-क्षेत्रों में सबसे पसंदीदा राष्ट्र (MFN) प्रतिबद्धताएं दी हैं।
- 100 प्रतिशत निर्यात जो भारत से न्यूजीलैंड के लिए होगा, शुल्क मुक्त पहुंच मिलेगी। इसमें सभी शुल्क लाइनें शामिल हैं। कपड़ा, चमड़ा, जूते, इंजीनियरिंग सामान और प्रसंस्कृत खाद्य क्षेत्रों जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्र विस्तारित बाजार पहुंच से सशक्त होंगे।
- न्यूजीलैंड के अन्य व्यापारिक साझेदारों की तरह, भारतीय उत्पादों को प्रवेश के समय से ही शून्य शुल्क बाजार पहुंच प्राप्त होगी, इससे वे न्यूजीलैंड में पूरी तरह से प्रतिस्पर्धी होंगे और उन्हें समान अवसर मिलेंगे।
- यह समझौता 2047 तक विकसित भारत के लिए एक नई पीढ़ी का व्यापार समझौता टैरिफ, प्रतिभा, निवेश और कृषि उत्पादकता से युवाओं, किसानों, महिलाओं, कारीगरों और लघु एवं मध्यम उद्यमों को सशक्त बनाता है।
- भारत ने द्विपक्षीय व्यापार मूल्य के 95 प्रतिशत हिस्से को कवर करने वाली 70.03 प्रतिशत शुल्क लाइनों पर शुल्क उदारीकरण की पेशकश की है, इसके साथ ही भारत के संवेदनशील क्षेत्रों की रक्षा के लिए 29.97 प्रतिशत शुल्क लाइनों को इससे बाहर रखा है।

- **किसान-ग्रामीण अर्थव्यवस्था-घरेलू उद्योगों की सुरक्षा के लिए प्रतिबंधित उत्पाद** : दुग्ध उत्पाद, पशु उत्पाद (भेड़ के मांस के अलावा), कृषि उत्पाद (प्याज, चना, मटर, मक्का, बादाम आदि), चीनी, कृत्रिम शहद, पशु, वनस्पति और तेल शामिल। साथ ही हथियार और गोला-बारूद, रत्न और आभूषण, तांबा और उससे बनी वस्तुएं (कैथोड, कारतूस, छड़ें, कॉइल आदि), एल्युमिनियम और उससे बनी वस्तुएं आदि।

30% शुल्क मदों पर तत्काल शुल्क समाप्त कर दिया जाएगा, इसमें लकड़ी, ऊन, भेड़ का मांस, चमड़ा-कच्ची खाल आदि शामिल हैं।

- वहीं 35.6% शुल्क को 3, 5, 7 और 10 वर्षों में चरणबद्ध तरीके से समाप्त किया जाना है, इसमें पेट्रोलियम तेल, माल्ट का अर्क, वनस्पति तेल और चुनिंदा विद्युत और यांत्रिक मशीनरी, पेप्टोन आदि शामिल हैं।
- **न्यूजीलैंड में पढ़ाई के बाद काम का वीजा** : पेशेवर तौर तरीकों से छात्रों की आवाजाही को बढ़ावा दिया जाएगा। कोई संख्यात्मक सीमा नहीं है। स्टेम में बैचलर और मास्टर डिग्री वाले छात्रों को 3 साल तक और डॉक्टरेट शोधकर्ताओं को 4 साल तक पढ़ाई के बाद काम करने का अधिकार मिलेगा।

भारतीय पेशेवरों के लिए 'अस्थायी रोजगार प्रवेश वीजा' का **5,000** का विशेष कोटा।

- उत्पादकता, किसानों की आय और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ाने के लिए सेब, कीवी फल और मनुका शहद के लिए कृषि उत्पादकता साझेदारी और 'उत्कृष्टता केंद्र'।
- कृषि उत्पादकता सहयोग के साथ-साथ कोटा और न्यूनतम आयात कीमतों के माध्यम से नियंत्रित बाजार पहुंच से घरेलू उत्पादकों के लिए सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

इंस्पेक्शन को मान्यता

किफायती दवाओं के भरोसेमंद सप्लायर के तौर पर भारत की स्थिति को मजबूत करने के लिए शून्य शुल्क, फार्मास्यूटिकल्स और मेडिकल डिवाइस के लिए फास्ट ट्रैक अप्रूवल के साथ ही अमेरिका, ईयू, यूके, कनाडा के रेगुलेटर से इंस्पेक्शन को मान्यता दी गई है।

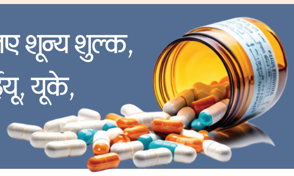

दौर की वार्ताओं और कई अंतरिम बैठकों के बाद, दोनों पक्षों ने 22 दिसंबर 2025 को समझौता पूरा किया। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौता केवल नौ महीने में पूरा हुआ है। यह भारत द्वारा किसी विकसित देश के साथ किए गए सबसे तेजी से संपन्न मुक्त व्यापार समझौतों में से एक है। यह विकसित अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी का महत्वपूर्ण कदम है, जो विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के अनुरूप है। पिछले साढ़े तीन वर्षों में भारत ने अपना 7वां एफटीए किया है। भारत ने कुल 9 एफटीए फाइनल किए जो 38 विकसित अर्थव्यवस्थाओं को कवर करेंगे। यह दुनिया की लगभग 65 से 70 प्रतिशत जीडीपी को कवर करेगा। ■

भारत

वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्तंभ

भारत और कोरिया के बीच हजारों वर्ष पुराने सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा देने की दृष्टि से कोरिया के राष्ट्रपति ली जे-म्युंग ने 19 से 21 अप्रैल तक भारत की यात्रा की। इस दौरान दोनों देशों के बीच जहाज निर्माण, समुद्री लॉजिस्टिक्स, पर्यावरण सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर समझौता हुआ और साथ मिल कर आगे बढ़ने का लिया गया निर्णय...

आठ वर्ष के बाद कोरिया के किसी राष्ट्रपति की यह भारत यात्रा रही और ली जे-म्युंग की यह पहली भारत यात्रा थी। यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि लोकतांत्रिक मूल्यों, मार्केट इकोनॉमी और नियम-कानून का सम्मान करना दोनों देशों के डीएनए में है। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भी दोनों देशों का हित एक समान है। इन सबके आधार पर पिछले एक दशक में दोनों देशों के संबंध अधिक गतिशील और व्यापक हुए हैं। कोरिया के राष्ट्रपति की इस यात्रा से भरोसेमंद साझेदारी को अब भविष्य की साझेदारी के रूप में बदला जाएगा। चिप से लेकर शिप तक, टैलेंट से लेकर टेक्नोलॉजी तक, एन्वायरमेंट से लेकर एनर्जी तक, हर क्षेत्र में सहयोग के नए अवसरों को साकार किया जाएगा।

कोरिया के राष्ट्रपति ली जे-म्युंग ने कहा कि भारत, विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और 1.4 अरब लोगों का घर होने के नाते, वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्तंभ है। भारत और कोरिया का द्विपक्षीय व्यापार, आज 27 अरब डॉलर तक पहुंच चुका है और इसे वर्ष

समझौता ज्ञापन...

- बंदरगाहों के क्षेत्र में सहयोग।
- औद्योगिक सहयोग समिति की स्थापना।
- इस्पात आपूर्ति श्रृंखला के लिए प्रौद्योगिकी और व्यापार के क्षेत्र में सहयोग।
- लघु एवं मध्यम आकार के उद्यमों के क्षेत्र में सहयोग।
- समुद्री विरासत के क्षेत्र में सहयोग।
- एनपीसीआई इंटरनेशनल पेमेंट्स लिमिटेड और कोरियन फाइनेंशियल टेलीकम्युनिकेशंस एंड क्लियरिंग इंस्टीट्यूट के बीच समझौता।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग।
- भारत-कोरिया डिजिटल सेतु के लिए संरचना।
- जलवायु एवं पर्यावरण के क्षेत्र में सहयोग।
- वर्ष 2026-2030 के लिए भारत और दक्षिण कोरिया के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान।
- सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योगों में सहयोग।
- खेल क्षेत्र में सहयोग।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

घोषणाएं...

- आर्थिक सुरक्षा संवाद का शुभारंभ।
- विशिष्ट आगंतुक कार्यक्रम (डीवीपी) की स्थापना।
- जलवायु परिवर्तन, आर्कटिक और समुद्री सहयोग सहित वैश्विक विषय-वस्तुओं पर दोनों विदेश मंत्रालयों के बीच संवाद का शुभारंभ।
- दक्षिण कोरिया का हिंद प्रशांत महासागर पहल में शामिल होना।
- दक्षिण कोरिया का अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन में और भारत का ग्लोबल ग्रीन ग्रोथ इंस्टीट्यूट (जीजीजीआई) में शामिल होना।
- वर्ष 2028-29 को भारत-दक्षिण कोरिया मैत्री वर्ष के रूप में मनाना।

महत्वपूर्ण तथ्य...

- व्यापार सहयोग के लिए एक इंडस्ट्रियल को-ऑपरेशन कमेटी का गठन किया गया है।
- कोरिया की कंपनी, खासकर लघु और मध्यम उद्योग की भारत में एंट्री सहज करने के लिए कोरियन इंडस्ट्रियल टाउनशिप स्थापित करेगी।
- अगले एक वर्ष के अंदर, दोनों देशों के बीच ट्रेड एग्रीमेंट को अपग्रेड भी किया जाएगा।
- भारत में 2028 में भारत-कोरिया फ्रेंडशिप फेस्टिवल आयोजित किया जाएगा।
- पीपूल टू पीपूल कनेक्ट को मजबूत करने के लिए एजुकेशन, रिसर्च सहयोग और टुरिज्म को बढ़ावा दिया जाएगा।

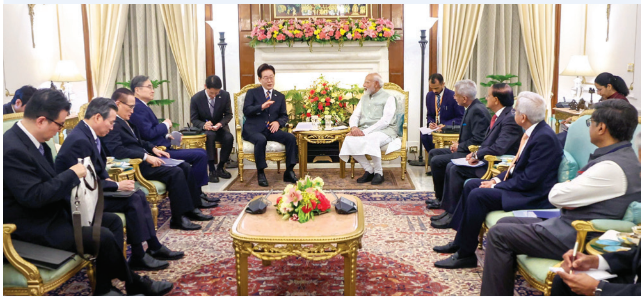

2030 तक बढ़ा कर 50 बिलियन डॉलर से अधिक पहुंचाने का लक्ष्य तय किया गया है। साथ ही दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को सुगम बनाने के लिए भारत-कोरिया फाइनेंशियल फोरम की शुरुआत की गई है। ▪

भारतीय शास्त्रीय नृत्य की महान साधिका

कथक की पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़ते हुए कुमुदिनी लाखिया ने नृत्य को एक नई दिशा दी और इसके लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने न केवल कथक सीखा बल्कि सिखाया भी। यही कारण है कि आज उनका नाम कथक के पर्याय के रूप में लिया जाता है। कथक नृत्य को अपनी कल्पनाशीलता और प्रस्तुति के माध्यम से एक नया आयाम देने वाली कुमुदिनी लाखिया भारतीय शास्त्रीय नृत्य की एक ऐसी महान साधिका मानी जाती हैं जो अपने पीछे छोड़कर गई हैं एक बड़ी विरासत...

जन्म : 17 मई 1930, मृत्यु : 12 अप्रैल 2025

भारत की प्रतिष्ठित नृत्यांगना और कथक को नई दिशा देने वाली कुमुदिनी लाखिया का जन्म 17 मई 1930 को गुजरात के अहमदाबाद में हुआ था। बचपन से ही उनका रुझान कला की ओर था। यही कारण है कि उन्होंने सात साल की उम्र से ही कथक की शिक्षा लेनी शुरू कर दी और अग्रणी कलाकार बनने की दिशा में आगे बढ़ चलीं। उन्हें 1960 के दशक में कथक को एकल नृत्य श्रेणी की सीमाओं से हटकर सामूहिक नृत्य के रूप में भी बदलने का श्रेय दिया जाता है। इतना ही नहीं, उन्होंने कथक नृत्य की प्रस्तुतियों में समकालीन कहानियों को जोड़ने जैसे नवाचार कर उसे नया रूप दिया।

कथक को मंच पर एक नया स्वरूप, सोच और सौंदर्य देने वाली कुमुदिनी लाखिया ने वर्ष 1964 में अहमदाबाद में कदंब नृत्य एवं संगीत विद्यालय की स्थापना की जो भारतीय नृत्य और संगीत को समर्पित एक संस्था है। इस संस्था ने कथक नृत्य की तकनीक, शब्दावली और प्रस्तुति को विकसित करने में अपना संपूर्ण ध्यान और दृष्टि समर्पित की। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने अनगिनत विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया और उनका मार्गदर्शन किया। उन्होंने अभिनव समकालीन व्याख्याओं के जरिए कथक नृत्य की प्रस्तुति को एक नया रूप दिया। यही कारण है कि उन्हें कथक के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग का श्रेय दिया जाता है। इतना ही नहीं, उन्होंने हिंदी फिल्म 'उमराव जान' की कोरियोग्राफी भी की।

1987 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया, जिसके बाद उन्हें 2010 में पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया। वर्ष 2025 में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उन्हें कला के क्षेत्र में योगदान के लिए मरणोपरांत पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया। उनकी ओर से उनके पोते ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। लगभग पचहत्तर वर्षों के अपने लंबे और सफल नृत्य जीवन में उन्होंने पचास से अधिक देशों में प्रस्तुतियां दीं।

12 अप्रैल 2025 की सुबह उनका निधन हो गया। उस समय वह 94 वर्ष की थीं। अहमदाबाद स्थित अपने घर पर उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, "कुमुदिनी लाखिया के निधन से बहुत दुःख हुआ। उन्होंने एक उत्कृष्ट सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में अपनी पहचान बनाई। कथक और भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के प्रति उनका जुनून पिछले कई वर्षों में उनके उल्लेखनीय कार्यों में झलकता था। एक सच्ची अग्रणी होने के साथ-साथ उन्होंने नर्तकियों की कई पीढ़ियों को भी संवारा। उनके योगदान को हमेशा संजोया जाएगा।"

X

PMO India
@PMOIndia

भारत को विकसित बनाने का मिशन अनवरत चल रहा है।

और जब मैं विकसित भारत की बात करता हूं... तो उसका सबसे मजबूत स्तंभ भारत की नारीशक्ति है: PM @narendramodi

Rajnath Singh
@rajnathsingh

हमें AI का सिर्फ उपयोग ही नहीं, बल्कि उसे सही दिशा भी देनी है। सामूहिक प्रयासों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से ही इसकी शक्ति का सार्थक उपयोग संभव है। भारत इस दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। भारतीय अब केवल नए मॉडल ही नहीं बना रहे, बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और कई मामलों में बेहतर मॉडल विकसित कर रहे हैं।

Amit Shah
@AmitShah

मोदी जी के नेतृत्व में केंद्रीय कैबिनेट ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना-III को ₹83,977 करोड़ की लागत से जारी रखने की स्वीकृति दी है। इसमें ग्रामीण कृषि बाजारों (GrAMs), स्कूलों और अस्पतालों को कनेक्टिविटी से जोड़ने को प्राथमिकता दी गई है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी, रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और यातायात भी अधिक सुगम होगा।
#CabinetDecisions

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari

🇮🇳 आयुष्मान भारत संकल्पना स्वस्थ और सेहतमंद भारत की नींव है। प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के नेतृत्व में 🇮🇳 देश में कार्यान्वित प्रधानमंत्री जन स्वास्थ्य योजना आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए वरदान साबित हो रही है।🩺💊💉🩸

#AyushmanBharatDiwas
#आयुष्मान_भारत_दिवस

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

माननीय प्रधानमंत्री श्री @NarendraModi जी के मार्गदर्शन में देश आज अपनी विरासत को नए आत्मविश्वास के साथ पुनर्स्थापित कर रहा है और कारीगरों की प्रतिभा को वैश्विक पहचान दिलाने का संकल्प निरंतर सशक्त हो रहा है।

इस प्रेरक पहल के लिए आयोजकों को बहुत-बहुत बधाई, जो हमारे बुनकरों और कारीगरों को एक सशक्त मंच प्रदान करते हुए सराहनीय कार्य कर रहे हैं। ऐसे प्रयास 'विकसित भारत 2047' को नई ऊर्जा देते हैं।

Dr Mansukh Mandaviya
@mansukhmandviya

'अंत्योदय' के मंत्र और मोदी सरकार के संकल्प से, आज कश्मीर के श्रमिकों को मिला उनका पहला ESIC अस्पताल।

📍 ओमपोरा, बडगाम

पीएम नरेंद्र मोदी ने हरदोई में 594 किमी लंबे ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे का किया उद्घाटन, मेरठ से प्रयागराज अब सात घंटे में पहुंचिए | बताया-12 जिलों को जोड़ने वाला यह मार्ग नए सपनों और नए अवसरों का द्वार, कहा...

गंगा एक्सप्रेसवे विकास की नई जीवनरेखा विकासशील भारत के भाग्य को देगा आकार

काशी में पीएम का 17 किमी लंबा रोड-शो

चार मई के नतीजे विकसित भारत के संकल्प को करेंगे मजबूत : पीएम मोदी

भारत के विकास के लिए सौर और पवन ऊर्जा बेहद आवश्यक : प्रधानमंत्री मोदी

दुनिया में आसन्न ऊर्जा संकट के बीच बोले पीएम, यह देश के भविष्य की सुरक्षा

ये भी बोले पीएम

जनगणना सिर्फ सरकारी काम नहीं, सबकी जिम्मेदारी

जनगणना में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी अहम : प्रधानमंत्री

टैगोर ने कई प्रसिद्ध संस्थानों को आकार दिया

वर्तमान समय में बुद्ध के विचार और भी अहम

गणित ओलंपियाड में बेटियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया

वैज्ञानिकों को बधाई दी

पीएम का अंदाज...आंखों पर काला चश्मा, हाथ में कैमरा

गंगा बंगाल की आत्मा इसमें बसती है सभ्यता

बंगाल के विकास व बंगाली लोगों की समृद्धि के लिए पीएम ने जताई प्रतिबद्धता

हुगली पर पीएम मोदी का नौका विहार

न्यूजीलैंड से मुक्त व्यापार समझौता, 100 फीसदी भारतीय निर्यात पर कोई शुल्क नहीं

कपड़ा, परिधान, चमड़ा, जूते-चप्पल, रत्न और आभूषण के निर्यात को मिलेगा बढ़ावा | 1.8 लाख करोड़ का निवेश भारत में करेगा न्यूजीलैंड, रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे

डेयरी उत्पाद रियायतों से बाहर

न्यूजीलैंड से लकड़ी व ऊन के आयात पर शुल्क नहीं

चारधाम की यात्रा अपनाएं पांच संकल्प

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्ट्वा विपुलदक्षिणैः।
न तत्फलमवाप्नोति तीर्थाभिगमनेन यत् ॥

भाव है... बड़े-बड़े यज्ञों और दान आदि से हमें अपार पुण्य प्राप्त होते हैं। और इन अनुष्ठानों से भी कहीं अधिक पुण्य, हमें तीर्थयात्राओं से प्राप्त होता है।

देवभूमि उत्तराखंड की पावन धरती पर चारधाम यात्रा का शुभारंभ हो गया है। बाबा केदार के दर्शन सहित चारों धामों की यह पावन यात्रा भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना का एक भव्य उत्सव है। इस यात्रा को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों के नाम एक प्रेरणादायी पत्र लिखकर कहा, डिजिटल उपवास रखें और प्राकृतिक सुंदरता को जीने का प्रयास करें! ये पांच संकल्प करें...

1. **स्वच्छता सर्वोपरि** धाम और उसके आसपास स्वच्छता बनाए रखें। नदियों को साफ रखने के लिए अपना योगदान दें।
2. **प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता** हिमालय दिव्य धरा के प्रति संवेदनशील रहे। प्रकृति के संतुलन को बनाए रखते हुए पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें।
3. **सेवा, सहयोग और सद्भाव** तीर्थयात्री प्रत्येक दिन, किसी न किसी रूप में, लोगों की सेवा का एक काम अवश्य करें।
4. **वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा** अपने कुल खर्च का पांच प्रतिशत हिस्सा लोकल उत्पादों को खरीदने पर खर्च करें।
5. **अनुशासन, सुरक्षा और संयम का पालन** यात्रा के नियमों और यातायात निर्देशों का पालन करें। यात्रा को सुरक्षित और सुगम बनाएं।

न्यू इंडिया समाचार पाक्षिक

आर.एन.आई, DELHIN/2020/78812, 16-31 मई, 2026
आरएनआई DELHIN/2020/78812 (प्रकाशन तिथि- 30 अप्रैल 2026, कुल पृष्ठ-42)

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा, प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

प्रकाशक
कंचन प्रसाद
महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो

कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो,
सूचना भवन, द्वितीय तल,
नई दिल्ली- 110003 से प्रकाशित